लेखकीय - बहुत कम लोग इस अज्ञात तथ्य से परिचित होंगे कि प्रथ्वी पर होने वाली सभी अकाल मृत्यु और स्वाभाविक मृत्यु के बाद लगभग तीस प्रतिशत लोग 'प्रेतगति' को प्राप्त होते हैं। इसमें अकाल मृत्यु वालों का दस से पन्द्रह प्रतिशत होता है और लगभग पन्द्रह से बीस प्रतिशत ही स्वाभाविक मृत्यु से मरे लोगों का होता है। बीमारी, दुर्घटना, हत्या, टोना आदि द्वारा अकाल मृत्यु को प्राप्त हुये लोग, अभी उनकी आयु शेष रहने से, अपने सूक्ष्म शरीर में आयु का ठीका पूर्ण होने तक भटकते रहते हैं। ये साधारण और अक्सर बडे प्रेतों से डर कर रहने वाले प्रेत होते हैं।

लेकिन खास तौर पर स्वाभाविक मृत्यु मरे लोग अज्ञानतावश उल्टे, सीधे, नीच, और अज्ञात देवी देव पूजने से प्रेतगति को प्राप्त होते हैं। क्योंकि अनजाने में वे स्वयं ही अपना संस्कार उनसे जोड देते हैं। प्रायः ऐसे प्रेत पहले किस्म की अपेक्षा सबल होते हैं।

इसके अतिरिक्त एक तीसरी श्रेणी उन लोगों की भी होती है, जो जानबूझ कर प्रेत, मसान, जिन्न आदि को लालच हेतु या शौकिया सिद्ध करते हैं या अन्य तरीकों से उनकी सेवा करते हैं, सम्पर्क में रहते हैं। ये भी अन्त समय प्रेतगति को ही प्राप्त होते हैं। ये बडे और खतरनाक और ताकतवर प्रेत होते हैं।

इसके भी अलावा कुछ गलत ढंग से वामपंथी साधनायें करने वाले, जिनमें शव साधना, शमशान साधना, कापालिक आदि करने वाले भी अन्त में ऐसी ही गति को प्राप्त होते हैं। इसी प्रकार की साधनाओं में एक 'विशेष' साधना और है, जो अक्सर लोग भक्ति समझ कर करते हैं और अधिकांश स्त्री पुरुष पूजा सोच कर करते हैं (किसी कारणवश इसको बताना उचित नहीं) ये भी अन्त में इसी गति को प्राप्त होते हैं। और इनमें से बहु प्रतिशत नीच देवों के गण बनते हैं।
मनुष्य जीवन जितना जीते जी महत्वपूर्ण है। उससे कहीं ज्यादा मरने पर समस्याये हैं। क्योंकि एक बार पंच तत्वों से बना ये भौतिक शरीर छूट कर यदि अति दुखदायी और कष्टदायक प्रेतयोनि को प्राप्त हो जाता है। तो बङे लम्बे समय तक उस जीव को अनेकानेक प्रकार के दारुण कष्टों को भोगना होता है।
प्रस्तुत कहानी ऐसे ही कुछ तथ्यों और स्थितियों का वर्णन करती है।
- राजीव कुलश्रेष्ठ

आगरा

प्रेतनी का मायाजाल

शाम के सात बजकर चवालीस मिनट हो चुके थे।
वातावरण में हल्का हल्का अंधेरा फ़ैल चुका था। प्रसून इस समय कलियारी कुटी नामक एक बेहद गुप्त और सिद्ध स्थान पर मौजूद था।
कलियारी कुटी के आसपास का लगभग सौ किमी इलाका निर्जन वन था, सिर्फ़ उसकी एक दिशा को छोङकर, जो यहाँ से तीन किमी दूर कलियारी गांव के नाम से जाना जाता था। इसको इस तरह से समझें कि सौ किमी व्यास का एक वृत बनायें, और उसमें बीस अंश का हिस्सा काट दिया जाय, और यही बीस अंश वाला हिस्सा इंसानों के सम्पर्क वाला था।

शेष हिस्सा एकदम निर्जन रहता था।
कलियारी कुटी को साधनास्थली के रूप में उसे उसके गुरु 'बाबाजी' ने प्रदान किया था और तबसे इस स्थान पर प्रसून कई बार सशरीर और अशरीर आ चुका था। अपनी पहली अंतरिक्ष यात्रा उसने इसी स्थान से अशरीर की थी।
कलियारी कुटी के छह किमी के दायरे में यहाँ पूर्व में तपस्यारत रह चुके किसी तपस्वी पुरुष की 'आन' लगी हुयी थी। वो तपस्वी पुरुष कौन था। इसकी जानकारी उसे नहीं थी और न ही बाबाजी ने उसे कभी कुछ बताया था।
उस कुटी के निकट ही पहाडी श्रंखला से एक झरना निकलता था। जिसमें पत्थरों के टकराने से साफ़ हुआ पानी उजले कांच के समान चमकता था। ये इतना स्वच्छ और बेहतरीन जल था कि कोई भी इसको बेहिचक आराम से पी सकता था।
कुटी से चार फ़र्लांग दूर वो पहाडी थी जिस पर इस वक्त प्रसून मौजूद था। इस पहाडी पर चार फ़ुट चौडी और दस फ़ुट लम्बी, दो फ़ुट मोटी, दो पत्थर की शिलाएं एक घने वृक्ष के नीचे बिछी हुयी थी। इस तरह यह एक शानदार प्राकृतिक डबल बेड था।
कलियारी गांव से साढ़े तीन किमी की दूरी पर और इस पहाडी से आधा किलोमीटर की दूरी पर एक पुराना शमशान स्थल था। जिसके एक साइड का दो किमी का इलाका किसी नीच वाम शक्ति ने 'बांध' रखा था।
कभी कभी उसे हैरत होती थी कि एक ही स्थान पर दो विपरीत शक्तियां यानी सात्विक और तामसिक अगल बगल ही मौजूद थी, जो एक तरह से असंभव जैसा था।
प्रसून ने एक सिगरेट सुलगायी और जैसे यूँ ही कलियारी विलेज की ओर देखने लगा। जहाँ बहुत हल्के प्रकाश के रूप में जीवन के चिह्न नजर आ रहे थे।
एक तरफ़ साधना के लिये इंसानी जीवन से दूर एकदम निर्जन में भागना, और दूसरी तरफ़ लगभग अपरिचित से इस जनजीवन को दूर से देखना, एक अजीब सी सुखद अनुभूति देता था।
प्रसून पहाडी पर टहलते हुये अपने घर के बारे में सोचने लगा।
नीलेश अपनी गर्लफ्रेंड मानसी के साथ उसके घर मारीशस गया हुआ था। बाबाजी

किसी अज्ञात स्थान पर थे और इस वक्त उसके सम्पर्क में नहीं थे।
उसने अंतरिक्ष की ओर देखा। जहाँ धीरे धीरे जवान होती रात के साथ असंख्य तारे नजर आने लगे थे। उसका दिल कर रहा था कि कलियारी कुटी में अशरीर होकर सूक्ष्म लोकों की यात्रा पर निकल जाये, जो इन्हीं तारों के बीच अंतरिक्ष में हर ओर फ़ैले हुये थे।
पर बाबाजी के आदेशानुसार उसे बीस दिन का समय इसी कलियारी कुटी में एक विशेष साधना करते हुये बिताना था।
- दाता। उसके मुख से आह सी निकली - तेरी लीला अपरम्पार।
उसने रिस्टवाच की लाइट आन कर समय देखा।
रात के नौ बजने वाले थे।
तभी उसे अपने आसपास एक विचित्र सा अहसास होने लगा।
हत्या.. कुसुम.. हत्या.. कुसुम..! ये शब्द बारबार उसके जेहन पर जैसे दस्तक सी देने लगे।
इसका सीधा सा मतलब था कि आसपास कोई सामान्य आदमी मौजूद है। जिसके दिमाग में इस तरह के विचारों का अंधङ चल रहा था।
इस 'आन' लगे हुये और दूसरी साइड पर बांधे गये स्थान पर एक सामान्य आदमी का मौजूद होना और वो भी किसी हत्या के इरादे से एक अजूबे से कम नहीं था। तपस्वी की 'आन' लगा हुआ स्थान इंटरनेट के उस 'वाइ फ़ाइ' स्थान के समान होता है। जिसमें आम जिंदगी की बात दूर से ही बिना प्रयास के कैच होने लगती है, और इसी आन के प्रभाव से 'जीव' श्रेणी में आने वाली आत्मायें एक अज्ञात प्रभाव से उस स्थान से अनजाने ही दूर रहती हैं।
वह इस नयी हलचल के बारे में सोच ही रहा था कि शमशान स्थल की तरफ़ एक रोशनी सी हुयी और कुछ ही देर में बुझ गयी।
क्या माजरा था ?
वह पूर्ण सचेत होकर उसी तरफ़ उस 'अनजान जीव' की तरफ़ एकाग्र हो गया।

- क्या वह उसके पास जाकर देखे। उसने सोचा - या यहीं से उसका 'माइंड रीड' करे। फ़िर अपना यही विचार उसे सही लगा और उसने उसके दिमाग से सम्पर्क जोडा।
वह एक आदमी था। जिसके पास इस समय एक भरी हुयी रिवाल्वर थी, और वह कुसुम नाम की किसी औरत की हत्या कर देना चाहता था। इससे ज्यादा इस वक्त उसके दिमाग में और कुछ नहीं था, जो प्रसून रीड करता।
उसकी जिन्दगी के और भी पिछले पन्ने उसने खोलने की कोशिश की। जिसमें वह उस वक्त पूर्णतया असफ़ल रहा। इसकी बेहद ठोस वजह ये थी कि इस वक्त वह आदमी पूरी एकाग्रता से इसी विचार पर केन्द्रित था, और उसकी जिन्दगी के अन्य अध्याय बैंक के किसी मजबूत सेफ़ वाल्ट की तरह लाक्ड थे।
कुसुम नाम की वह औरत कौन थी और इस वक्त यहाँ क्यों कर आयेगी।
ये उसके लिये एक अजीब गुत्थी थी।
अब उसके लिये एक बडा सवाल ये भी था कि वह उससे कैसे बात करे ? करे या न करे। वह उससे कैसे पूछेगा कि वो यहाँ क्यों है ? यही सवाल वो उससे करेगा तो वह उसे क्या जबाब देगा ?
- मालिक। उसने गहरी सांस ली - अजब गजब खेल तेरे।
फ़िर उसे एक उपाय सूझा।
पहल उसी की तरफ़ से हो तो अच्छा था।
ऐसा सोचकर प्रसून ने कमर में बंधी बेल्ट से लटकती टार्च निकाली और जलाकर तीन चार बार सर्चलाइट की तरह इस तरह घुमाया, मानों सरकस वाले शो प्रारम्भ होने पर घुमा रहे हों।
परिणाम उसकी आशा के अनुरूप ही निकला।
वह उसकी यानी वहाँ किसी अन्य की उपस्थित जान गया था और इसकी एक ही वजह थी।
उस समय उसका बेहद चौंकन्ना होना।
वह आदमी इस नयी स्थिति पर कुछ देर तक खडा खडा सोचता रहा और फ़िर मानो

एक गम्भीर निर्णय के साथ उसकी ओर आने लगा। प्रसून ने उसे अपनी और भी सही पोजीशन जताने के लिये आठ दस बार लाइटर इस तरह जलाया बुझाया। मानों सिगरेट जलाने में किसी तरह की दिक्कत हो रही हो।
दस मिनट बाद ही वह पहाडी से नीचे एक वृक्ष के पास आकर खडा हो गया। पर उसने उसके पास आने या उसे पुकारने की कोई कोशिश नहीं की। उल्टे उसने उसका फ़ार्मूला उसी पर आजमाते हुये सिगरेट बीडी में से कुछ मुँह से लगाकर तीन बार माचिस को जलाया।
अब वह उससे लगभग दो सौ कदम दूर पहाडी के नीचे कुछ हटकर मौजूद था। परन्तु वे दोनों ही इस कशमकश में थे कि एक दूसरे के बारे में कैसे जाना जाय ?
तब उसने मानों निरुद्देश्य ही टार्च की रोशनी अपने ऊपर पेड पर फ़ेंकी और स्वाभाविक ही प्रसून के मुख से तेज आवाज में निकला - ऐ वहाँ पर कौन है ?
- मैं हूँ भाई। वह तेज आवाज में बोला - मेरा नाम दयाराम है।
और अगले कुछ ही मिनटों में वह उसके पास पत्थर की शिला पर बैठा था और उसे उस निर्जन और वीराने स्थान में अकेला देखकर बेहद हैरान था। उसकी ये हैरानी और तीव्र जिज्ञासा का हो जाना प्रसून का अत्यधिक नुकसान कर सकती थी। इसलिये प्रसून ने उसे बताया कि वह बायोलोजी का छात्र है, और उसका कार्य कुछ अलग किस्म के जीव जन्तुओं पर शोध करना है, जो प्रायः इस क्षेत्र में अधिक मिलते हैं। उसने जानबूझ कर आधी अंग्रेजी और बेहद कठिन शब्दों का प्रयोग किया था। ताकि उसकी बात भले ही उसकी समझ में न आये। पर वह उसके यहाँ होने के बारे में अधिक संदेह न करे, और कुछ समझता कुछ न समझता हुआ संतुष्ट जाय।
वही हुआ।
लेकिन इसमें प्रसून की चपल बातों से ज्यादा इस वक्त उसकी मानसिक स्थिति सहयोग कर रही थी। जिसके लिये वह इस लगभग भुतहा और डरावने स्थान पर रात के इस समय मौजूद था।
कुछ देर में संयत हो जाने के बाद उसने उसका नाम पूछा।

प्रसून ने सहज भाव से बताया।
- प्रसून जी। वह आसमान की तरफ़ देखता हुआ बोला - आपकी शादी हो चुकी है ?
- नहीं। प्रसून ने जंगली क्षेत्र की तरफ़ लगे घने पेडों की तरफ़ देखते हुये कहा - दरअसल कोई लडकी मुझे पसन्द ही नहीं करती। आपकी निगाह में कोई सीधी साधी लडकी हो तो बताना।
- फ़िर तो तुम खुशकिस्मत ही हो, दोस्त। उसने एक गहरी सांस ली और बोला - इस सृष्टि में औरत से ज्यादा खतरनाक कोई चीज नहीं है ?
कहकर कुछ देर तक वह जैसे किसी गहरी सोच में डूबा रहा, फ़िर उसने चरस से भरी हुयी सिगरेट निकाल कर सुलगायी, और एक दूसरी सिगरेट प्रसून की ओर बढ़ाई। लेकिन फ़िर उसके मना करने पर वह सिगरेट के कश लगाता हुआ मानों अतीत में कहीं खो गया। और जैसे उसकी उपस्थिति को भी भूल गया।
तब प्रसून ने एक सादा सिगरेट सुलगायी और रिस्टवाच पर दृष्टिपात किया।
रात के लगभग दस बजने वाले थे।
चरसी सिगरेट की अजीब सी कसैली महक वातावरण में तेजी से फ़ैल रही थी।
दयाराम हल्के नशे में मालूम होता था।
इसका सीधा सा अर्थ था कि उसके पास आने से पूर्व ही वह एक-दो सिगरेट और भी पी चुका था।
यह उसके लिये बिना प्रयास के ही हुआ फ़ायदे का सौदा था। क्योंकि तब सच्चाई जानने के लिये उसे उसके दिमाग से ज्यादा छेडछाड नहीं करनी थी। बल्कि उस गम के मारे ने खुद ही रो रोकर उसे अफ़साना ए जिन्दगी सुना देना था।
कुछ देर तक दयाराम चरसी सिगरेट के सुट्टे लगाता रहा।
फ़िर उसने शमशान की तरफ़ निगाह डाली। मानों वह बडी बेकरारी से किसी की प्रतीक्षा कर रहा हो।
प्रसून को उसकी इस हरकत पर जैसे बेहद हैरत हो रही थी।
अंधेरे में भला वह अपने लक्ष्य को कैसे देख सकता था। हालांकि चन्द्रमा की रोशनी

के कारण गहरा अंधेरा तो नहीं था। फ़िर भी वह इतना पर्याप्त नहीं था कि यहाँ से आधा किलोमीटर दूर वह किसी को आते जाते या खडा देख सके।
उसने दो तीन बार माचिस जलाकर बहाने से प्रसून का चेहरा मोहरा देखकर ये अन्दाजा लगाने की कोशिश की कि वह विश्वास करने योग्य है, या नहीं।
प्रसून अच्छी तरह समझ रहा था कि वो बार बार यही सोच रहा है कि अपना राज उसे बताये, या न बताये।
- तुम। अन्ततः दयाराम बोला - यही सोच रहे होगे कि आखिर मैं कौन हूँ, यहाँ क्यों आया हूँ ?
सच तो ये है प्रसून, मैं अपनी बीबी की हत्या करने आया हूँ। वो बीबी, जो मेरी बीबी है, पर जो मेरी बीबी नहीं है।
बात के बीच में ही वो अचानक हँसा, फ़िर ओर भी जोर से हँसा, और अट्टहास करने लगा - उफ़ है न कमाल ! बीबी है, पर बीबी नहीं है, तो सवाल ये है प्रसून जी, कि बीबी आखिर कहाँ गयी ? है वही, पर वो नही है, तो फ़िर कुसुम कहाँ गयी।
अगर मेरे साथ चार साल से रह रही औरत एक प्रेतनी है, तो फ़िर कुसुम कहाँ है, या फ़िर कुसुम लडकी नहीं एक प्रेत है। कौन यकीन करेगा इस पर ?
- तुम..। वह उसे लक्ष्य करता हुआ बोला - तुम, शायद यकीन कर लो, और तुम यकीन करो या न करो, पर इस वीराने में तुम्हें अपनी दास्तान बताकर मेरे सीने का ये बोझ हल्का हो जायेगा..?
दयाराम परतापुर का रहने वाला था।
उसकी तीन शादियाँ हो चुकी थी पर शायद उसकी किस्मत में पत्नी का सुख नहीं था। उसकी पहली शादी पच्चीस बरस की आयु में राजदेवी के साथ हुयी थी। नौ साल तक उसका साथ निभाने के बाद राजदेवी का देहान्त हो गया। मरने से पूर्व सात साल तक राजदेवी गम्भीर रूप से बीमार ही रही थी, और इसी बीमारी के चलते अंततः उसका देहान्त हो गया।
राजदेवी के कोई संतान नहीं हुयी थी।

पैंतीस बरस की आयु में दयाराम का दूसरा विवाह शारदा के साथ हुआ।
शारदा से दयाराम को तीन बच्चों का बाप बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उनकी ग्रहस्थी मजे से चल रही थी कि एक दिन चौदह साल बाद शारदा भी बिजली के करेंट से चिपक कर मर गयी।
जिस दिन शारदा मरी।
उसका सबसे छोटा बच्चा दो साल का था, बीच का आठ साल का, और बड़ा ग्यारह साल का। दयाराम के सामने बच्चों के पालन पोषण की बेहद समस्या आ गयी।
उसके घर में ऐसा कोई नहीं था, जो इस जिम्मेदारी को संभाल लेता।
तब दयाराम की सास ने अपने धेवतों का मुख देखते हुये अपनी तीस साल की लड़की कुसुम जो शादी के सात साल बाद विधवा हो गयी थी। उसकी शादी फ़िर से दयाराम के साथ कर दी।
यहीं से दयाराम की जिंदगी में अजीब भूचाल आना शुरू हो गया।
विवाह के बाद दयाराम कुसुम को जब पहली बार बुलाने गया तो मोटर साइकिल से गया था। उसके घर और ससुराल के बीच में लगभग एक सौ साठ किलोमीटर का फ़ासला था।
लगभग सौ किलोमीटर का फ़ासला तय करते करते दोपहर हो गयी।
तब दयाराम ने सुस्ताने और खाना खाने के विचार से मोटर साइकिल एक बगिया में रोक दी। घने वृक्षों से युक्त इस बगिया में एक कुंआ था। जिस पर एक रस्सी बाल्टी राहगीरों को पानी उपलब्ध कराने के लिये हर समय रखी रहती थी।
बगिया से कुछ ही दूर पर बड़े बड़े तीन गढ्ढे थे, और कुछ ही आगे एक विशाल पीपल के पेड़ के पास एक बड़ी पोखर थी।
बेहद थकान सा अनुभव करते हुये दयाराम का ध्यान इस विचित्र और रहस्यमय बगिया के रहस्यमय वातावरण की ओर नहीं गया। अलबत्ता खेतों हारों बाग बगीचों में ही अधिक घूमने वाली कुसुम को ये बगिया जाने क्यों बड़ी रहस्यमय सी लग रही थी।

वह बगिया एक अजीब सा रहस्यमय सन्नाटा ओढ़े हुये जान पडती थी। उसके पेडों पर बैठे उल्लू और खुसटिया जैसे पक्षी मानों एकटक कुसुम को ही देख रहे थे।
दयाराम खाना खाकर आराम करने के लिये लेट गया।
लेकिन विवाह के कई सालों बाद, कुसुम यकायक एक पुरुष की निकटता पाकर शीघ्र सहवास के लिये उत्सुक हो रही थी। जब दयाराम ने बगिया में मोटर साइकिल रोकी। तभी उसने सोचा कि दयाराम ने ये निर्जन स्थान इसीलिये चुना है कि वो भी कुसुम की ही तरह शीघ्र ही उसके साथ सहवास की इच्छा रखता है।
क्योंकि बगिया के आसपास दूर तक गांव नहीं थे, और न ही वहाँ कोई पशु चराने वाले थे।
अपने पति के मरने के बाद कुसुम लम्बे समय तक दैहिक सुख से वंचित रही थी। इसलिये आज दयाराम को दूसरे पति के रूप में पाकर उसकी सम्भोग की वह दबी इच्छा स्वाभाविक ही बलबती हो उठी।
पर उसकी इच्छा के विपरीत दयाराम लेटते ही सो गया और जल्दी ही खर्राटे लेने लगा।
हालांकि कुसुम भी कुछ थकान सी महसूस कर रही थी। पर कामवासना के तेज कीडे जैसे अब उसके अन्दर कुलुबुला रहे थे। जिनके चलते वह अजीब सी बैचेनी महसूस कर रही थी। अभी वह दयाराम से इतनी खुली भी नहीं थी कि उसे जगाकर सम्भोग का प्रस्ताव कर देती।
अतः उसने एक बेबसी की आह सी भरी, और सूनी बगिया के चारों तरफ़ देखा।
फ़िर हार कर वह एक पेड से टिककर बैठ गयी और उसकी निगाह वृक्षों पर घूमने लगी।
तब अचानक ही उसके शरीर में जोर की झुरझुरी हुयी, और उसके समस्त शरीर के रोंगटे खडे हो गये।
उल्लू जैसे गोल मुँह वाले वो छोटे छोटे पक्षी कुसुम को ही एकटक देख रहे थे। उनकी मुखाकृति ऐसी थी, मानों हँस रहे हों। घबरा कर उसने अन्य वृक्षों पर नजर डाली तो

वहाँ भी, उसे एक भी सामान्य पक्षी नजर नहीं आया।
सभी वैसे ही अजीब से गोल मुँह वाले थे, और एकटक उसी को देख रहे थे।
तब पहली बार कुसुम को अहसास हुआ कि क्यों वो बगिया उसे रहस्यमय लग रही थी।
वहाँ अदृश्य में भी किसी के होने का अहसास था। और निश्चय ही कोई था, जो उसके आसपास था। और बेहद पास था।
भयभीत होकर उसने दयाराम को पुकारा। पर वह जैसे किसी गहरी मायावी नींद में सो रहा था। तभी उसने अपने पुष्ट उरोजों पर किसी का स्पर्श महसूस किया।
वह बेहद घबरा गयी, और अभी वह कुछ और समझ पाती कि किसी लिजलिजे से हाथ के स्पर्श ने उसकी नाभि से नीचे तक जाकर योनि को छुआ।
वह चिल्लायी - बचाओ।
पर उसके मुँह से आवाज न निकली।
यकायक ही उसका सिर चकराने लगा, और कोई उसे जोहङ की तरफ़ खींचकर ले जाने लगा।
और फ़िर उसकी चेतना अंधकार की गहन गहराईयों में डूबती चली गयी।
- फ़गआत। प्रसून के मुँह से अचानक निकला - लोखङा ?
दयाराम ने चौंककर उसकी तरफ़ देखा।
वह अतीत से बाहर आ चुका था।
उसका नशा जैसे हल्का होने लगा था।
प्रसून ने एक सिगरेट जलायी, और सिगरेट केस उसकी तरफ़ बढ़ाया।
सिगरेट सुलगाने के बाद उसने फ़िर एक निगाह शमशान पर डाली पर वहाँ कोई नहीं था।
पेंट में घुसी हुयी रिवाल्वर से उसे परेशानी हो रही थी। उसने रिवाल्वर निकालकर शिला पर रख दी और सिगरेट के कश लगाता हुआ टहलने लगा।
फ़िर मानों उसे कुछ याद आया और वह बोला - अभी अभी तुमने क्या कहा..लोखङा

?
यह एक तरह से उससे गलती हो गयी थी।
वह दयाराम को अपनी प्रेत जगत आदि की जानकारी का परिचय नहीं देना चाहता था।
क्योंकि ऐसा होने पर वह उत्सुकता से अनेकों सवाल करता। और सबसे बड़ी बात कलियारी कुटी वाला गुप्त स्थान, जो इस पहाड़ी से महज चार फ़र्लांग दूर था। उस तरफ़ उसका ध्यान जा सकता था, और उस स्थिति में फ़िर उसे विशेष उपाय करने होते।
अतः उसने बात को घुमाते हुये कहा - कुछ नहीं, अभी अभी मुझे एक दुर्लभ जीव पास ही नजर आया था, पर मेरा ध्यान तुम्हारी बातों पर लगा था। खैर कोई बात नहीं, जाने दो, फ़िर आयेगा।
फ़गआत या लोखड़ा प्रेत की वो किस्म होती है। जो किसी अभिशप्त स्थान पर, या इस्तेमाल न किये जाने वाले शमशान स्थल के आसपास ही रहती है।
अब तक दयाराम की संगत में प्रसून बहुत कुछ जान गया था। कुछ घटना वह अपने दिमाग से अपनी जानकारी के अनुसार सुना अवश्य रहा था। पर कुछ रहस्य इसमें ऐसा भी था। जिसके बारे में दयाराम भी नहीं जानता था।
दरअसल ना जानकारी में दयाराम एक अभिशप्त बगिया और अभिशप्त स्थान पर रुक गया था, जहाँ प्रेतवासा था। और पचास, साठ या अस्सी साल पहले उस स्थान को शमशान के रूप में प्रयोग किया जाता होगा। बाद में कुछ घटनाएं ऐसी घटी होंगी, जिससे वो स्थान अभिशप्त या अछूत समझा जाने लगा होगा। इसी वजह से उसके आसपास आबादी नहीं थी, और इसी वजह से वहाँ पशु आदि चराने वाले नहीं थे। क्योंकि जो लोग प्रेतवासा के बारे में जानते होंगे, वह जानबूझ कर आफ़त क्यों मोल लेंगे।
इस तरह धीरे धीरे मनुष्य के दूर होते चले जाने से, उस स्थान पर प्रेतों का कब्जा पक्का होता चला गया, और दयाराम कुसुम जैसे व्यक्ति अज्ञानता में उसमें फ़ंसने लगे।

पर उसके दिमाग में और भी बहुत से सवाल थे।
कुसुम पर प्रेत का आवेश हो जाना कोई बडी बात नहीं थी।
लेकिन चार साल में उसने, या प्रेत ने, ऐसा क्या किया था। जो दयाराम उसे मारने पर आमादा था। दयाराम को कैसे मालूम पडा कि कुसुम पर प्रेत था। उसने क्या इलाज कराया। और सबसे बडा सवाल दयाराम उसको मारना ही चाहता था, तो घर पर आसानी से मार सकता था।
वह इस वीराने में क्यों आया ?
चार साल तक प्रेतनी का एक आदमी के साथ रहना मामूली बात नहीं थी।
आखिर प्रेतनी कौन थी और क्या चाहती थी ?
अगर प्रेतनी पूरी तरह से कुसुम के शरीर का इस्तेमाल कर रही थी।
तो कुसुम इस वक्त कहाँ थी, और किस हाल में थी ?
ऐसे कई सवाल थे, जिनका उत्तर दयाराम, और सही उत्तर, कुसुम के पास था।
पर कुसुम इस वक्त कहाँ थी ?
बेहद सुहानी, मगर बेहद रहस्यमय हो उठी रात धीरे धीरे अपना सफ़र तय कर रही थी।
प्रसून ने कलियारी कुटी की तरफ़ देखा।
उसने सोचा - अगर दयाराम न आया होता, तो वह क्या कर रहा होता ?
दयाराम अब भी टहल रहा था।
उसने उत्सुकतावश शिला पर रखी टार्च की रोशनी पेड पर डाली।
पेड नीबू और बेर के मिले जुले आकार वाले फ़लों से लदा पडा था। ये गूदेदार मीठा फ़ल था, जो प्रसून भूख लगने पर अक्सर खा लिया करता था।
कलियारी कुटी से पांच सौ मीटर दूर ऐसा ही एक अन्य वृक्ष था। जिस पर जामुन के समान लाल और बैंगनी रंग के चित्तेदार फ़ल लगते थे। ये फ़ल भी खाने में स्वादिष्ट थे। पर ये एक चमत्कार की तरह कलियारी गांव और अन्य गांव वालों से बचे हुये थे। क्योंकि पहाडी के नीचे का इलाका किसी प्रेत शक्ति ने बांध रखा था, और कलियारी कुटी को किसी तपस्वी की आन लगी हुयी थी। ऐसी हालत में सामान्य मनुष्य यदि

इधर आने की कोशिश करता तो उसे डरावने मायावी अनुभव हो सकते थे।
जैसे अचानक बडे अजगर का दिखाई दे जाना, अचानक किसी हिंसक जन्तु का प्रकट हो जाना, अचानक कोई रहस्यमयी आकृति का दिखाई देना, वर्जित क्षेत्र में कदम रखने वाले को तेज चक्कर आने लगना आदि जैसे कई प्रभाव हो सकते थे।
जिससे आदमी घबरा जाता, और ऐसी जगहों पर आना छोड देता।
और ये वास्तविकता अभी दयाराम भी नहीं जानता था कि वो प्रसून के होने से इतनी देर यहाँ टिक सका था। वरना शिकारी खुद ही शिकार हो जाना था।
प्रेतों के लिये रिवाल्वर का भला क्या महत्व था।
अचानक दयाराम चौकन्ना हो उठा।
और प्रसून रहस्यमय अन्दाज में मुस्कराया।
उसने फ़ुर्ती से रिवाल्वर उठा ली और सतर्कता से इधर उधर देखने लगा।
प्रसून जानता था कि उसके रोंगटे खडे हो चुके हैं, और निकट ही वह किसी प्रेत की उपस्थिति महसूस कर रहा है, जिसका कि चार साल के अनुभव में वह अभ्यस्त हो चुका था।
वास्तव में उस वक्त वहाँ दो प्रेत पहाडी के नीचे मौजूद थे।
जो प्रसून को स्पष्ट दिखाई दे रहे थे।
उनमें से एक औरत अंगी था, जो शायद कुसुम थी। और दूसरा कोई अन्य पुरुष अंगी था।
हालांकि प्रसून 'कवर्ड' स्थिति में था, फ़िर भी वे ऊपर नहीं आ रहे थे।
इसके दो कारण थे, एक तो ऊपर वाला इलाका लगभग आन के क्षेत्र में आता था। जहाँ प्रेत क्या यक्ष, किन्नर, गंधर्व, डाकिनी, शाकिनी जैसी शक्तियां भी घुसने से पहले सौ बार सोचती।
दूसरे प्रसून भले ही कवर्ड (उच्चस्तर के तान्त्रिक साधक अपने को एक ऐसे अदृश्य कवच में बन्द कर लेते हैं, जिससे उनकी असलियत का पता नहीं चलता। उच्चस्तर के महात्मा, साधु, संत प्रायः इस तरीके को अपनाते हैं, जो किन्ही अज्ञात कारणोंवश

बेहद आवश्यक होता है) था। पर उस स्थिति में भी वे एक अनजाना भय महसूस कर रहे थे।
और उन्हें जैसे अज्ञात खतरे की बू आ रही थी।
प्रसून दयाराम को और अधिक डिस्टर्ब नहीं होने देना चाहता था। इस तरह उसका कीमती समय नष्ट हो सकता था। अतः उसने उसकी निगाह बचाते हुये एक ढेला उठाया और फ़ूंक मारकर प्रेतों की ओर उछाल दिया।
उसे इसकी प्रतिक्रिया पहले ही पता थी।
प्रेत अपने अंगों में जबरदस्त खुजली महसूस करते हुये तेजी से वहाँ से भागे।
उनका अनुमान सही था।
पहाङी पर उनके लिये खतरा मौजूद था और वे अब लौटकर आने वाले नहीं थे।
कुछ ही देर में दयाराम सामान्य स्थिति में आ गया।
वह फ़िर से पत्थर की शिला पर बैठ गया और बैचेनी से अपनी उंगलिया चटका रहा था।
एक खुशहाली की खातिर, अपने बच्चों की सही परवरिश की खातिर, उसने तीसरी बार शादी की। और उस शादी ने उसके पूरे जीवन में आग लगा दी।
पर वह कुछ भी तो नहीं कर सका।
क्या करता बेचारा ?
- फ़िर। उसका ध्यान पुनः अपनी तरफ़ आकर्षित करते हुये प्रसून ने पूछा - उसके बाद क्या हुआ ?
बगिया में सोया हुआ दयाराम जैसे अचानक ही हङबङाकर उठा।
उसने कलाई घङी पर नजर डाली तो तीन बजने वाले थे।
यानी ढाई घन्टे, वह एक तरह से घोङे बेचकर सोया था।
उसे बेहद हैरत थी कि ऐसी चमत्कारी नींद अचानक उसे कैसे आ गयी थी ?
वह तो महज आधा घन्टा आराम करने के उद्देश्य से लेट गया था। मगर लेटते ही उसकी चेतना ऐसे लुप्त हुयी मानों किसी नशे के कारण बेहोशी आयी हो।

पर वह नींद में भी नहीं था ?
अपनी उसी अचेतन अवस्था में वह एक घनघोर भयानक जंगल में भागा चला जा रहा था।
जंगल में रहस्यमयी पीला, काला अंधकार छाया हुआ था।
आसमान और उजाला कहीं नजर नहीं आ रहा था।
बस चारों तरफ़ वृक्ष ही वृक्ष थे और उन वृक्षों के बीच में छोटे छोटे मंदिर बने हुये थे।
दयाराम को तब ऐसा लग रहा था कि जैसे कुछ अज्ञात लोग उसके पीछे पड़े हुये हैं, जो उसको मार डालना चाहते हैं। बस उन्हीं से बचने को वह भाग रहा था।
अचानक भागते में ही वह एक पेड़ की झुकी डाली से टकराया, और गिर पड़ा।
बस इसके बाद उसे कुछ याद नहीं रहा।
उठने के तुरन्त बाद ही उसने एक बैचेन दृष्टि कुसुम की तलाश में इधर उधर दौड़ाई।
वह गुमसुम सी एक पेड़ के नीचे बैठी थी, और एकटक कुंएं की ओर देख रही थी।
मानों औरत के स्थान पर एक जिंदा लाश हो ?
दयाराम ने उसे पुकारा और आगे की यात्रा के लिये तैयार हो गया।
वह मशीनी अन्दाज में मोटर साइकिल पर बैठ गयी।

दयाराम के तीनों बच्चे सगी मौसी को माँ के रूप में पाकर बेहद खुश थे।
वह अपने लम्बे चौड़े घर में अकेला ही रहता था। शारदा के मरने के बाद उसने एक नौकर रख लिया था, जो उसके तीनों बच्चों और गाय बकरी आदि पशुओं की देखभाल करता था।
उसका यह पुश्तैनी मकान काफ़ी बड़ी जगह में बना हुआ था। जिसमें बड़े बड़े बाईस कमरे थे। इसके अतिरिक्त बाहर गली पार करके पशुओं के लिये एक अहाता था, और बारह कमरों का एक स्कूल बना हुआ था, जो अब बन्द था, लेकिन दयाराम की सम्पत्ति था।
उसके एकदम बगल वाला घर, किसी व्यवसायी का था। जिसे वह गोदाम के रूप में

इस्तेमाल करता था, और उसमें कोई रहता नहीं था। इसी तरह दूसरी साइड में भी, लगभग आठ सौ मीटर की जगह खाली पडी थी।
कुल मिलाकर दयाराम की वह विशाल हवेली आबादी के लिहाज से लगभग अकेली ही थी।
कुसुम के शादी के बाद घर में पहली बार पैर रखते ही एक अजीब सा रहस्यमय वातावरण सृजित हो गया। जिस पर अनजाने में ही दयाराम का ध्यान नहीं गया।
उस रात ही पहली बार दयाराम ने जब कुसुम से सम्भोग किया तो उसे कुसुम में एक अजीब सी और अनजानी ताकत का अहसास हुआ। वह पहले ही सहवास में शरमाने के बजाय कुछ हद तक निर्लज्ज सा व्यवहार कर रही थी।
दो तीन बार तो उसने दयाराम को वहशी की तरह लगभग दबोच ही लिया।
दयाराम ने सोचा, कुसुम साली होने के नाते खुली हुयी है और अपनी ताकत दिखा रही है तथा एक लम्बे समय के बाद पुरुष का संसर्ग हासिल होने से वह मर्यादाहीन हो रही है।
अतः उसे कुछ अजीब सा तो लगा, पर तत्काल ही कोई बात उसकी समझ में नहीं आयी।
लेकिन अगली सुबह तक सब कुछ सामान्य हो चला था।
कुसुम ने बडी दक्षता से घर संभाल लिया था और चुहलबाजी करती हुयी एक नयी पत्नी की तरह व्यवहार कर रही थी।
दयाराम ने राहत की सांस ली।
उसकी उजडी ग्रहस्थी फ़िर से बस चुकी थी।
वह ज्यादातर दिन भर घर से बाहर खेतों पर ही रहता था।
इसलिये अगले ढाई साल तक वह अपने घर में फ़ैल चुके मायाजाल को नहीं जान सका था। हालांकि उसे कुछ न कुछ ऐसा अवश्य था, जो अजीब लगता था, पर वो कुछ, क्या था।
यह उसकी समझ से बाहर था।

इन ढाई सालों में कुसुम के दो बच्चे हुये, जो तीन-चार महीने की अवस्था होते ही रहस्यमय तरीके से मर गये। कुसुम का व्यवहार भी अजीब था। इसका जिक्र उसके दोनों बडे बच्चों ने और उसके नौकर रूपलाल ने भी किया था।
बच्चों के स्कूल जाते ही, घर अकेला होते ही, वह एकदम नंगी हो जाती थी, और ज्यादातर नंगी ही रहती थी। उसे पानी के सम्पर्क में रहना बहुत अच्छा लगता था। गर्मियों में वह चार बार तक, और सर्दियों में दो बार नहाती थी।
दयाराम उससे सम्भोग करे, या न करे। वह रात में निर्वस्त्र ही रहती थी।
दयाराम के पूछने पर उसने कहा कि - कपडों में वह घुटन महसूस करती है।
एक अजीब बात जिसने दयाराम को सबसे ज्यादा चौंकाया, वह यह थी कि उसने कभी अपने जाये बच्चों को स्तनपान नहीं कराया। इसका कारण उसने यह बताया कि उसकी छातियों में दूध ही नहीं उतरता।
फ़िर रूपलाल के इशारा करने पर दयाराम ने गौर किया कि वह कभी पलक नहीं झपकाती थी अर्थात उसकी आंखें किसी पत्थर की मूर्ति की तरह अपलक ही रहती थीं।
रूपलाल ने यह भी बताया कि कभी वो गलती से उसकी नंगी हालत में घर में आ गया, तो भी उसने कपडे पहनने या कमरे में जाने की कोई कोशिश नहीं की।
रूपलाल बाहर स्कूल में रहता था। इसलिये काम पडने पर ही घर में आता जाता था।
ढाई साल बाद, इस तरह के अजीब अजीब समाचार सुनकर दयाराम मानों सोते से जागा।
जिन बातों को वह अब तक नजरअन्दाज कर रहा था। उनके पीछे कोई खतरनाक रहस्य छिपा हुआ था। यानी पानी सिर से ऊपर जा रहा था।
तब वह अपने बच्चों की खातिर बेहद चिंतित हो उठा।
जाने क्यों उसे अपनी ये हवेली बेहद खतरनाक और रहस्यमय लगने लगी।
और उसे एक अदृश्य मायाजाल का अहसास होने लगा।
यही सोच विचार करते हुये उसने आगे से घर में अधिक समय बिताने का निश्चय किया

।
और तब उसने दो स्पष्ट प्रमाण देखे।
पहला, जब वह बाथरूम के शीशे के सामने शेव कर रहा था।
कुसुम उसके ठीक पीछे आकर उससे एकदम सटकर खडी हो गयी। उसके पुष्ट उरोज दयाराम की पीठ से सटे हुये थे, और उसके दोनों हाथ दयाराम के 'अंग' को खोज रहे थे, पर ..?
पर शीशे में उसका कोई प्रतिबिम्ब नहीं था। जो कि उस बडे आकार के शीशे में निश्चित होना चाहिये था।
उस समय दयाराम इस रहस्य को अपने दिल में ही छुपा गया।
और उसने कुसुम से कुछ नहीं कहा।
लेकिन अब वह कुसुम से मन ही मन भयभीत रहने लगा।
खासतौर पर वह अपने छोटे छोटे बच्चों के लिये चिंतित हो उठा।
और फ़िर दूसरा प्रमाण भी उसे जल्दी ही मिल गया।
वह दोपहर के समय छत पर था। जब सुमन सूखे कपडे उतारने छत पर आयी।
दयाराम और कुसुम एक ही स्थिति में खडे थे।
लेकिन सूर्य की रोशनी में छाया सिर्फ़ दयाराम की बन रही थी।
कुसुम किसी भी कोण से खडी हो, उसकी छाया नहीं बन रही थी।
उफ़ ! दयाराम के पूरे शरीर में अज्ञात भय की तेज सिहरन सी हुयी।
और उसके जैसा हिम्मती जिगर वाला भी कांप उठा - भूतनी..?
कुसुम तो औरत के रूप में प्रेत थी ?
इसका मतलब, वह अब तक एक प्रेतनी के साथ रह रहा था।
कुसुम नीचे चली गयी, तो दयाराम कुसुम के साथ गुजारे अपने जिंदगी के क्षणों में वह रहस्य खोजने की कोशिश करने लगा, जब जब उसने कुसुम में कोई अजीब बात देखी हो।
एक हिसाब से सभी बातें अजीब थी, लेकिन उन्हें किसी औरत का विशेष स्वभाव

मानों, तो कुछ भी अजीब नहीं था।
- हे भगवान। उसने असमंजस में माथा रगडा - तेरे खेल कितने अजीब हैं। तेरे खेल कितने न्यारे हैं। इसको भला तेरे अलावा कौन समझ सकता है ?
धीरे धीरे रात के बारह बज गये।
दयाराम की बात सच थी।
प्रसून को अपनी कहानी सुनाते सुनाते वह अपने आपको काफ़ी हल्का महसूस कर रहा था, और लगभग भूल ही गया था कि वह यहाँ किस उद्देश्य से आया था।
अब वह बारबार चरस की भरी सिगरेट भी नहीं पी रहा था। रिवाल्वर की तरफ़ तो उसका ध्यान ही नहीं था। ये शायद चार सालों से उसके मन में भरा हुआ गुबार निकलने से हुआ था।
ठंडी रात और खुला आसमान भी उसको राहत पहुंचा रहे थे।
उसकी आधी कहानी तो प्रसून की समझ में आ रही थी, पर आधी को लेकर वह भी उलझन में था।
भूतिया किस्सों में चित्र विचित्र घटनाओं का होना कोई मायने नहीं रखता।
पर एक सामान्य आदमी के लिये वह एक अदभुत तिलिस्म से कम नहीं होता।
वास्तव में वह एक तिलिस्म ही होता है।
एक मायाजाल !
और ये भी एक मायाजाल ही था।
एक प्रेतनी का मायाजाल !
- फ़िर। प्रसून ने उत्सुकता से पूछा - उसके बाद तुमने क्या किया, जब तुम्हें यह पता चला कि बीबी के नाम पर तुम्हारे साथ रह रही औरत कुसुम नहीं, बल्कि एक प्रेत है ?
- फ़िर मैं क्या करता। वह अजीब से भाव से बोला - मैं तो अभी ये ही तय नहीं कर पाया था कि वो कौन है और उसका रहस्य क्या है। कुसुम कहाँ चली गयी ? ये कहना भी बेबकूफ़ी थी, क्योंकि थी तो वो कुसुम के शरीर में ही।
आखिर वो प्रेतनी कौन थी, क्या चाहती थी, प्रसून जी, ये अनेकों प्रश्न मेरे सामने थे, पर

इनका जबाब कौन देता। कहाँ से लाता मैं इनका जबाब ?
पर नहीं, शायद ये बात गलत है।
हर प्रश्न का उत्तर है, हर समस्या का समाधान है।
वो अगर दर्द देता है, तो दवा भी देता है। वो अगर मुसीबत भेजता है, तो हल भी भेजता है।
और फ़िर एक दिन 'दवा' आयी।
कुसुम के प्रेत होने के दो प्रमाण मिल जाने के बाद एक दिन सुबह दस बजे दयाराम अपने बन्द स्कूल के सामने बरगद के पेङ के नीचे कुर्सी डालकर बैठा था। अब उसके दिमाग में यही द्वंद चलता रहता था कि इस नयी स्थिति में क्या किया जाय, क्या न किया जाय।
वह अपनी समस्या को लेकर तीन अलग अलग तान्त्रिकों से भी कुसुम से छिपकर मिल चुका था। उन्होंने कुछ गंडा ताबीज बना दिये थे, और कुछ उपाय भी बताये थे कि कुसुम के ऊपर सोते में यह भभूत छिडक देना, प्रसाद के बहाने पेङे में उसको यह 'विशेष लौंग' खिला देना, यहाँ अगरबत्ती लगाना, वहाँ ये धागा बांधना आदि आदि पर इन उपायों से कोई लाभ नहीं हुआ।
तब चिंतित दयाराम अपने नौकर रूपलाल के बताये अनुसार हनुमान जी की विशेष पूजा करने लगा। इससे वह अपनी मानसिक स्थिति में कुछ शांति तो महसूस करता, पर कुसुम में कोई परिवर्तन नहीं हुआ।
तब मानों एक दिन भगवान ने उसकी सुनी।
कुर्सी पर बैठा हुआ दयाराम उस समय चौंका, जब गली से गुजरता हुआ एक जटाधारी बाबा उसकी हवेली के सामने रुक गया, और बङे चकित भाव से उसकी हवेली को ऊपर से नीचे तक बारबार देखने लगा।
दयाराम ने उसको रोकने टोकने का कोई यत्न नहीं किया।
वह बेहद दिलचस्पी से जटाधारी साधु की हरकतों को देख रहा था।
जटाधारी साधु ने थैले में से कुछ बीज से निकाले, और एक बार गली में इधर उधर

देखा।
दयाराम शीघ्रता से बरगद के मोटे तने के पीछे छुप गया।
गली को एकदम सूना पाकर जटाधारी साधु ने उन बीजों को मुठ्ठी बांधकर मन्त्र सा पढ़ते हुये फ़ूंका, और हवेली के गेट की तरफ़ उछाल दिया।
आश्चर्यजनक रूप से एक मिनट के अन्दर ही कुसुम हवेली के गेट पर आकर खडी हो गयी।
उस प्रेतनी की आंखें किसी छोटे तेज बल्ब के समान चमक रहीं थी। उसके ब्लाउज के सभी हुक खुले हुये थे, और ब्रा तो वह पहनती ही नहीं थी।
वह जलती हुयी आंखों से जटाधारी को घूर रही थी।
फ़िर दयाराम ने सुना।
जटाधारी कह रहा था - तो तू है, पूरा अड्डा है प्रेतों का, ऐ कुल्टा तेरा आदमी कहाँ है ?
कुसुम ने दरवाजा भडाक से ऐसे बन्द किया, मानों जटाधारी के मुँह पर मारा हो।
जटाधारी 'हो हो' करके हंसने लगा, और कुछ सोचता हुआ सा आगे बढ़ गया।
उसके थोडा आगे बढ़ते ही दयाराम बरगद के पीछे से निकल कर दौडते हुये जटाधारी के सामने पहुँचा, और हाथ जोडकर खडा हो गया।
उसने बताया कि वही उस हवेली का मालिक है, और फ़िर संक्षिप्त में बात बताने के बाद वह जटाधारी को स्कूल के अन्दर ले गया।
यहाँ कुसुम कभी नहीं आती थी, फ़िर भी सावधानी बरतते हुये उसने अन्दर से दरवाजा बन्द कर लिया।
रहस्यमय जटाधारी साधु कुर्सी पर बैठ गया, और स्कूल में नजर घुमाने लगा।
दयाराम आगे की बात, कुसुम का रहस्य जानने को बैचेन था।
उसने जटाधारी को पूरी बात शुरू से आखीर तक बतायी और फ़िर हाथ जोडकर बोला - महाराज, ये सब क्या घनचक्कर है, मैं तो तंग ही आ गया।
जटाधारी मध्यम स्तर का तान्त्रिक था, और सबसे अच्छी बात थी कि वह स्वभाव का

एकदम सच्चा था। वह फ़रुर्खाबाद के निकट कहीं कायमगंज नामक स्थान का रहने वाला था, और इस वक्त चम्बल के बीहडों में काली नदी के किनारे एक गुप्त स्थान पर साधना कर रहा था, और बाबा मूलचन्द के नाम से जाना जाता था। वह बस्ती में बहुत कम आता जाता था।

उसने दयाराम को बताया कि हवेली में तीन प्रेत रहते हैं, जो कुसुम पर आवेशित रहते हैं। लेकिन लगभग तीन साल से तीन प्रेतों से आवेशित वह औरत कैसे जिंदा है, यह उसके लिये भी हैरत की बात थी।

उन प्रेतों से उसको बचाना उसके लिये संभव न था। उसकी तान्त्रिक शक्ति अभी उस स्तर पर नहीं पहुंची थी। यह काम उसके गुरु कर सकते थे, पर उसके गुरु उससे आसाम जाने की कहकर गये थे, और तबसे उनका कोई पता नहीं था। ये भी निश्चित नहीं था कि वो कब लौटेंगे।

लेकिन फ़िर उसने तत्काल ही पाँच अभिमन्त्रित ताबीज भरे। जो उसके तीन बच्चों के लिये, एक उसके लिये, और एक रूपलाल के लिये था। इन ताबीजों से प्रेत उन लोगों का कोई विशेष अहित नहीं कर सकते थे। यह बात बाद में सच साबित हुयी। उसने कुछ और उपाय, कुछ और जरूरी बातें दयाराम को बतायी, और वहाँ से विदा हो गया।

जटाधारी बाबा से एक तरह से उसे कोई राहत नहीं मिली थी, और एक तरह से बहुत कुछ मिला था। उसकी समस्या ज्यों की त्यों मौजूद थी, पर वह और उसके बच्चे प्रेत के प्रभाव से रक्षित हो गये थे। यही बहुत बडी बात थी।

जटाधारी उसका और कुछ भला भले ही न कर सका हो, पर उसे एक विशेष कवच बनाकर दे गया, जिसके होते कोई भी बडी से बडी प्रेत शक्ति न उसको डरा सकती थी, और न ही हमला कर सकती थी।

अब प्रसून को उसके निडरता से इस स्थान पर होने और प्रेतों से लडने के हौसले का राज पता चल गया।

ये बात किसी हद तक तो सच थी, लेकिन पूरी तरह नहीं।

मूलचन्द बाबा शायद उसको ये सावधान करना भूल गया कि ये कवच बस्ती जैसे स्थानों पर ही कारगर होता है।
प्रेतों के क्षेत्र में पहुँचकर 'अछूत' जगह की वजह से कवच की शक्ति मामूली रह जाती है, और किसी गलती के हो जाने पर कवच खन्डित भी हो सकता था, और ऐसी हालत में दयाराम की मौत भी हो सकती थी। पर किसी उलझी हुयी समस्या से लगातार परेशान आदमी का दिमाग प्रतिशोध की अवस्था में पहुंच जाता है, और वह मरने मारने पर उतारू हो जाता है।
पर यह कैसा प्रतिशोध था, और किससे था। यह ठीक से उसकी भी समझ में नहीं आ रहा था।
अदृश्य़ और अज्ञात की इस लङाई को लङते हुये दयाराम को कुसुम की शादी के बाद के तीन साल गुजर गये, और तब कुसुम की आदतों में नये बदलाव होने लगे।
वह साधारण औरत से मदमस्त औरत में बदल गयी।
दयाराम ने कभी जिक्र नहीं किया था कि वह जानता है कि वो औरत न होकर एक प्रेतनी है। इस तरह के जिक्र से उसे क्या लाभ होना था ? और ढाई साल के बाद तो वह स्वयं इस हकीकत से ठीक से वाकिफ़ ही हुआ था।
अगले छह महीने उसने समाधान खोजने और क्या करना चाहिये, क्या नहीं करना चाहिये, जैसी कशमकश में गुजारे थे, और अब अपनी एक रिश्ते की ताई के सुझाव अनुसार कुसुम को किसी तरह से बालाजी ले जाने की फ़िराक में था।
कहते हैं न, ऊंट खो जाता है, तो परेशान आदमी उसको घङे में भी खोजने की कोशिश करता है।
लेकिन दयाराम उसको बालाजी ले जा पाये, उससे पहले ही वह एक मदमस्त हस्तिनी औरत की भांति बेकाबू हो उठी। कामवासना को लेकर उसमें जबरदस्त परिवर्तन हुआ, और वह हर वक्त कामातुर सी रहने लगी। वह रात में सोते हुये दयाराम को जबरन ही उठा लेती, और बलपूर्वक सम्भोग का आदेश सा देती।
हैरत की बात यह भी थी कि उस वक्त उसके आदेश में जाने क्या सम्मोहन होता कि

दयाराम उसका आदेश पालन करने पर विवश हो जाता, और इस तरह वह एक-एक रात में चार-चार बार तक सम्भोग की मांग करने लगी।
दूसरी बात ये हुयी कि अच्छे खाने पीने से बना दयाराम का हट्टा कट्टा शरीर तेजी से कमजोर होने लगा, और वह भी धीरे धीरे प्रेतभाव से आवेशित हो रहा था।
लेकिन मामला यहीं पर शांत नहीं हुआ।
कुसुम एक और नया खेल भी खेलने लगी।
वह अक्सर रात को ग्यारह-बारह बजे उठती, और दरवाजा खोलकर अहाता पार करते हुये दूसरी गली में छलांग लगाकर कूद जाती, और गली के आगे उस रास्ते पर तेजी से दौड़ लगा देती।
जहाँ 'मियां भीका' नाम का कब्रिस्तान था।
यह बात दयाराम को उस दिन पता चली। जब रात में कुसुम अपने बिस्तर से गायब थी।
उसने चारों तरफ़ देखा पर उसका कोई पता नहीं था।
बैचेनी से सिगरेट फ़ूंकता हुआ वह उसके लौटने का इंतजार करता रहा।
इंतजार करने के अलावा वह कर भी क्या सकता था ?
उस रात कुसुम साढ़े तीन बजे लौटी और चुपचाप लेटकर सो गयी।
दयाराम के लिये ये नया टेंसन था कि कुसुम आखिर रात को कहाँ जाती है।
वह समझ नहीं पा रहा था कि ऐसे अजीब हालातों में उसे क्या करना चाहिये ? उपाय पूछे तो किससे पूछे, और इसका उपाय भला क्या हो सकता था।
आखिर में उसने कुसुम का पीछा करने का निश्चय किया, और इस खेल को खत्म करने का निश्चय किया। उसने बरसों से बेकार रखा रिवाल्वर निकाल कर चेक किया, और गोलियां डालकर फ़ायर आदि करके संतुष्ट हो गया।
अब उसे इस बात का इंतजार था कि कुसुम रात में किसी सुनसान स्थान पर पहुँचे। जहाँ वो गोली मारकर उसकी हत्या कर दे, और लाश ठिकाने लगा दे।
उफ़ ! पागलपन में आदमी पता नहीं क्या क्या सोचता है।

जो भी हो, वह इस औरत से तंग आ गया था।
यह प्रेतनी हो, या कुसुम हो, या कोई भी हो।
अब हर हालत में उससे छुटकारा पाना था, तभी वह चैन की जिंदगी जी सकता था।
आखिर उसने कुसुम की हत्या का पक्का निश्चय कर लिया।
रात और अधिक गहरा चली थी, अपनी कहानी सुनाते सुनाते दयाराम भावुक हो उठा था।
जिंदगी की अजीब और रहस्यमय परिस्थियों ने इस धनी, सम्पन्न और जीवट इंसान को लगभग तोडकर रख दिया था। वह अपने मासूम बच्चों का मुँह देखकर हार जाता था। वरना तो वह गोली मार कर कब का इस भूतनी का खेल खत्म कर चुका होता।
पर उसके सामने और भी सवाल थे।
फ़िर वह अपनी सास को क्या बताता, वह समाज को क्या बताता।
दूसरे उसे खुद यह रहस्य मारे डाल रहा था कि अच्छी भली कुसुम आखिर प्रेत कैसे बन गयी ?
वह जब अपनी ससुराल जाता था, वो एक सामान्य औरत की तरह व्यवहार करती। उससे जीजा जीजा कहकर खूब हंसी मजाक करती। उस समय उसमें ऐसी कोई बात नहीं थी।
पहली विदा के समय बगिया में जो अजीब स्वप्न सा उसने देखा था, उसका क्या रहस्य था।
ये कुछ ऐसे सवाल थे, जो उसे जीने पर मजबूर कर रहे थे। लडने पर मजबूर कर रहे थे।
वरना तो ऐसी जिंदगी से, वह अब मर जाना ही चाहता था।
इस प्रेतनी का उद्देश्य क्या था, और ये कौन थी ?
जिसने उसकी हंसते खेलते घर को आग लगाकर रख दी थी।
आखिर दयाराम ने रात में ही उसका पीछा करने का निश्चय किया, और भरी हुयी रिवाल्वर के साथ वह इंतजार करने लगा कि कब वह रात को बाहर जाय।

लेकिन इंतजार की आवश्यकता ही न पडी।
कुसुम लगभग हर रात ही बाहर जाती थी।
रात के बारह बजते ही कुसुम उठी, और दयाराम पर एक दृष्टि डालकर घर से बाहर निकल गयी। वह बेहद फ़ुर्ती से उठा।
उसने रिवाल्वर खोंसा, और अहाते में आ गया।
जहाँ कुसुम बाउंड्रीबाल के पास खडी सडक की तरफ़ देख रही थी। मानों किसी का इंतजार कर रही हो, और फ़िर वह बेहद फ़ुर्ती से दीवाल पर चढ़कर लहराई, और सडक पर कूद गयी।
दयाराम अपनी पूर्ण शक्ति से उसका पीछा कर रहा था।
लेकिन वह तो जैसे चलने के स्थान पर हवा में उड रही थी।
और दयाराम के लिये उसका पीछा करना बेहद मुश्किल हो रहा था।
फ़िर कुछ ही देर में उसने बस्ती छोडकर पीपराघाट शमशान का रास्ता पकड लिया।
दयाराम एकदम चकरा गया।
उस सडक पर जो पीपराघाट से नदी के पार वीरान टेकरी पर ले जाती थी। उसकी गति और भी बढ़ गयी, और फ़िर मानों वह उडन-छू ही हो गयी।
दयाराम को दूर-दूर तक वह नजर नहीं आयी।
दाता, क्या माजरा था।
उसकी अच्छी तरह से समझ में आ गया था कि उसकी चाल इंसानी चाल हरगिज नहीं थी, और कोई भी इंसान इंसानी गति से उसे कभी नहीं पकड सकता था।
इस तरह उसका ये मन्सूबा भी फ़ेल हो गया कि आखिर ये कहाँ जाती है, और क्या करती है।
दयाराम का मन हुआ कि इन अजीब परिस्थितियों में अपने बाल नोच ले।
आखिरकार दयाराम को इस समस्या का हल भी मिल गया।
मंगलवार की शाम, जब वह हनुमान मन्दिर पर प्रसाद चढ़ाने गया। उसे मन्दिर के बाहर दो बुजुर्ग आदमी बात करते हुये मिले। वह किसी पिलुआ वाले सिद्ध अघोरी

की बात कर रहे थे, जो यमुना के खादरों में रहता था, और रात के दस बजे के बाद ही मिलता था।
दयाराम ने उन आदमियों से पिलुआ का सही पता पूछा, और उसी रात पिलुआ पहुँचा।
यह अच्छा था कि खादर होने के बाद भी मोटर साइकिल आराम से वहाँ तक जाती थी।
पिलुआ पहुँचकर दयाराम को बेहद आश्चर्य हुआ।
क्योंकि पहले वो समझता था कि अकेला वही प्रेत समस्या से जूझ रहा है। जबकि वहाँ इस तरह की समस्या और अन्य समस्याओं वाले लगभग चालीस लोग मौजूद थे। जिनमें आठ महिलाएं भी थी। दयाराम का नम्बर रात दो बजे सबके बाद आया।
अघोरी ने बङे शान्त होकर उसकी बात सुनी।
वह थोडा चिंतित भी दिख रहा था।
फ़िर अघोरी ने अपनी विद्या का उपयोग करते हुये बताया कि कुसुम रात को अक्सर तीन स्थानों पर ही जाती है। काली टेकरी, पलेवा मन्दिर, जो खन्डित हो चुका था, और कलियारी शमशान।
जिसमें कलियारी शमशान, वह अधिक जाती थी।
अघोरी ने बताया कि कुसुम पूरी तरह प्रेत ग्रस्त हो चुकी है, और यदि वह यहाँ गद्दी पर आ जाय, तो वह उसकी कुछ सहायता कर सकता था। वरना वह घर में नहीं जा सकता था।
दयाराम ने उसके बहुत हाथ पैर जोङे, पर अघोरी ने कहा कि वह मजबूर है।
दूसरे अघोरी ने एक रहस्यमय बात ये भी कही कि कुसुम के प्रेतबाधा से मुक्त हो जाने पर भी कोई लाभ नहीं होने वाला था, क्योंकि..?
पिलुआ पहुँचने का एक सबसे बङा लाभ दयाराम को ये हुआ कि अघोरी के पास किसी श्रद्धालु का दिया हुआ मोबायल फ़ोन था। जिसके जरिये वह कभी भी अघोरी से बात कर सकता था, और इसका खास फ़ायदा उसे ये मिलने वाला था कि अघोरी

बाबा उसे एन टाइम पर बता सकता था कि कुसुम उस वक्त कहाँ है ?
उसने कुसुम का फ़ोटो बाबा के पास जमा कर दिया।
पर उसे अघोरी की रहस्यमय बातें समझ में नहीं आ रही थी।
अघोरी ने उसे प्रेतबाधा से मुक्त कराने में कुछ खास रुचि नहीं दिखाई थी।
अघोरी को ऐसा क्या राज पता चला। जिसके बाद वह कुसुम के मामले से उदासीन हो गया था।
दयाराम पागल सा होने लगा।
गुत्थी सुलझने के बजाय दिन पर दिन उलझती ही जा रही थी।
फ़िर अगले मौके पर दयाराम ने जो देखा, उससे उसका दिमाग ही घूम कर रह गया।
अघोरी ने फ़ोन पर बताया कि आज रात एक बजे कुसुम काली टेकरी पर जायेगी।
बाबा की बात आजमाने के उद्देश्य से दयाराम कुसुम का पीछा करने के स्थान पर काली टेकरी से पहले ही एक स्थान पर जाकर छुप गया।
उस समय रात के बारह बजने वाले थे।
और दयाराम सशंकित ह्रदय से कुसुम का इंतजार कर रहा था।
ठीक पौन बजे, कुसुम एक हवा के झोंके के समान आयी, वह एकदम नंगी थी।
फ़िर कुछ देर तक इधर उधर देखने के बाद वह चिता जलने के स्थान पर लोटने लगी।
यकायक दयाराम के दिमाग में जैसे भयंकर विस्फ़ोट हुआ।
कुसुम गायब हो गयी थी, और अब उसके स्थान पर एक लोमडी और सियार के मिले जुले रूप वाला छोटा जानवर नजर आ रहा था।
दयाराम का दिमाग इस दृश्य को देखते ही मानों आसमान में चक्कर काटने लगा।
अब वह सोचने समझने की स्थिति में नहीं था।
उसने रिवाल्वर निकाला, और जानवर को लक्ष्य करके फ़ायर कर दिया।
मगर जानवर अपने स्थान से गायब हो चुका था।
उसकी आपबीती सुनता प्रसून अचानक एक झटके से उठकर खडा हो गया।
ये आदमी वाकई मुसीबत में था, बल्कि उसके अनुमान से कहीं ज्यादा मुसीबत में था।

अब वह समझ गया कि अघोरी ने उसकी सहायता से क्यों इंकार कर दिया था ?
शिव के नाम की बात करने वाले बहुसंख्यक अघोरी अक्सर वास्तव में 'मसान' पूजक होते हैं, और ये आसानी से मसान को सिद्ध कर छोटे मोटे चमत्कार दिखाते हैं।
दयाराम ने कुसुम के द्वारा जो रूप बदलने की बात कही थी, और जिस तरह रूप बदलने की बात कही थी। वह मसान का ही काम था। इस तरह अघोरी मसान से प्रभावित उस परिवार को नहीं छुडा सकता था। क्योंकि वे खुद ही ज्यादातर मसान से काम लेते हैं, और ऐसी स्थिति में मामला बिगड सकता था। अतः यह अघोरी के बस का मामला था ही नहीं, और इसीलिये जटाधारी जैसा छोटा साधक कोई भी 'पंगा' लिये बिना ही निकल गया।
'कंकाल कालिनी विद्या' और 'हाकिनी विद्या' ये दो विद्या या एक तरह से सिद्धियां होती हैं। कंकाल कालिनी में अकाल मृत्यु को प्राप्त लोगों की आयु को साधक अपनी या किसी की आयु में बदल सकता है।
इसी की निकटवर्ती हाकिनी विद्या होती है।
जिसमें हजारों मील दूर की बात जानी जा सकती है। हजारों मील दूर बैठे व्यक्ति को बुलाया जा सकता है। आम आदमी को ये जादू जैसे चमत्कार करने वाली विद्याएं बहुत आकर्षित करती हैं, पर इनका मोल बहुत चुकाना होता है, और इनका अन्त तो निश्चय ही पतनकारक होता है।
एक दृष्टिकोण से साधारण मन्दिरों में की जाने वाली भक्ति इससे कहीं ज्यादा अच्छी होती है। द्वैत की सही साधनाओं में इन विद्याओं का कोई महत्व नहीं होता।
अब उसे दयाराम की कहानी सुनने में कोई रुचि नहीं थी। पूरा खेल जैसे उसकी समझ में आ चुका था। लेकिन इसके साथ ही कई सवाल भी उठ खडे हुये थे। जिनका कोई उचित तरीका उसे नहीं सूझ रहा था कि वह दयाराम की सहायता करे, तो कैसे करे।
क्या कुसुम अभी जीवित थी ? उसके विचार से नहीं।
कुसुम की लाश, जो अभी चल फ़िर रही थी, उसका क्या किया जाय, और सबसे बडी बात दयाराम को कैसे समझाया जाय कि वह इस समस्या को इंसानियत के नाते हल

करना चाहता है ?
ऐसे और भी अनेकों प्रश्न थे। जिनका उस वक्त कोई सही हल उसे नहीं सूझ रहा था।
सुबह के चार बजने वाले थे।
पूरब दिशा में रोशनी धीरे धीरे बढ़ रही थी।
उसने एक सिगरेट सुलगाया, और कलियारी कुटी को देखते हुये आगे के कदम के बारे में सोचने लगा।
साथ ही ये विचार भी उसके दिमाग में स्वतः ही आ रहे थे कि इसी प्रथ्वी पर किसी किसी के लिये जीवन कितना रहस्यमय हो जाता है। ऐसे मकङजाल में फ़ंसा आदमी या कोई परिवार ये तय नहीं कर पाता कि करे तो आखिर क्या करे।
जाये तो किसके पास जाये ?
अक्सर लोग डर की वजह से ऐसी स्थिति का जिक्र भी अपने परिचय वालों से नहीं करते। क्योंकि दूसरे लोग भयभीत हो जाते हैं, और भूत-प्रेत प्रभावित परिवार से सम्पर्क ही खत्म कर देते हैं कि कहीं प्रेत उल्टा उन पर हावी न हो जाय।
मुख्य इसी कारण की वजह से जो भी प्रेत घटनायें होती हैं, वो लोगों की निगाह में नहीं आ पाती।
दयाराम पत्थर की शिला पर लेटा हुआ निर्विकार भाव से आसमान की ओर देख रहा था।
उसे थोङी देर इंतजार करने की कह कर प्रसून कलियारी कुटी की तरफ़ निगाह बचाकर चला गया।
और जब थोङी देर बाद लौटा, तो दयाराम अपने स्थान पर नहीं था।
अभी प्रसून पत्ते टहनियां आदि जलाकर चाय बना ही रहा था कि दयाराम अंगोछे से हाथ पोंछता हुआ लौट आया। उसने बताया कि दिशा मैदान (शौच निवृति) हेतु चला गया था।
इस स्थान पर गर्म चाय के साथ बिस्कुट देखकर उसे बेहद आश्चर्य हुआ।
चाय की चुस्कियों के बीच प्रसून ने उससे पूछा कि उसने कभी हनुमान बीसा का नाम

सुना है ? उसने बेहद आश्चर्य से कहा कि - हनुमान चालीसा तो उसने सुना है। हनुमान बीसा आज तक नहीं सुना।
प्रसून ने कहा - हनुमान बीसा एक गुप्त विद्या है, गुप्त बीसा है। जो बीस भूतों तक को भगा देता है। और इसके बारे में वह कुछ थोडा बहुत जानता है। यदि उसके घर में भूतों की संख्या बीस या उससे कम हुयी, तो शायद उसका फ़ार्मूला काम कर जाय, अन्यथा देख लेने में क्या हर्ज था ?
वास्तव में वह मजाक कर रहा था, पर मजाक के अन्दाज में नहीं।
वह चाहता था कि दयाराम का काम भी हो जाय, और वह उसकी असलियत भी न जान सके। उसने प्रसून की बात पर विश्वास तो नहीं किया।
पर उसके द्वारा उसके घर चलने की बात जाने क्यों उसे स्वाभाविक रूप से बेहद अच्छी लगी। दरअसल बीती रात में अपनी आपबीती सुनाते सुनाते वह उससे एक तरह की निकटता महसूस करने लगा था, और अब अपने को बेहद हल्का महसूस कर रहा था।

सुबह ठीक दस बजे, वे दोनों उसके घर में मौजूद थे।
वह जब घर में घुसे, कुसुम बाथरूम में नहा रही थी।
दयाराम के बच्चे स्कूल जा चुके थे।
रूपलाल ने उनके लिये चाय नाश्ते का प्रबन्ध किया।
कुसुम जब बाथरूम से बाहर आयी तो उसने एक अजनबी की तरह शंकित दृष्टि से प्रसून को देखा। प्रसून ने भी दयाराम की निगाह बचाते हुये जान बूझ कर अश्लील भाव से उसे देखा।
तब कुसुम की भूखी आँखों में एक अजीब सी चमक उभरी।
स्पष्ट था, कलियारी शमशान में उसकी भेंट के बाबजूद भी वो उसे पहचान नहीं सकी थी।
क्योंकि उस वक्त उसका पूरा ध्यान दयाराम पर ही रहा होगा, और उसे आशा भी नहीं

होगी कि दयाराम कलियारी भी पहुँच सकता है।
इस तरह वो दयाराम ही था, या नहीं। ये भी वो पता नहीं कर पाये।
क्योंकि आन लगे हुये क्षेत्र में न तो उनकी कोई विद्या काम कर सकती थी और न ही वो घुस सकते थे।
यदि रात में कुसुम और उसके साथी प्रेत को, प्रसून और दयाराम के बारे में जानकारी हो जाती तो शायद कुसुम कई दिन न लौटती, या शायद फ़िर कभी भी न लौटती।
इस तरह रहस्य का रहस्य ही रहता ?
फ़िर उसका उद्देश्य क्या था ?
वह दयाराम परिवार से क्या चाहती थी, और कब तक उसके परिवार पर काबिज बना रहना चाहती थी ?
इन सारे प्रश्नों का उत्तर मिलना संभव ही नहीं था।
अब उसके सामने तीन तरीके थे।
कुसुम को बांध दिया जाय, और घर का अस्थायी कीलन कर दिया जाय।
इससे कुसुम घर से बाहर नहीं जा पायेगी, और घर में कोई प्रेत घुस नहीं पायेगा।
लेकिन इस स्थिति में कुसुम और दयाराम दोनों उसकी असलियत जान सकते हैं।
दूसरी, कुसुम को पहले की ही तरह खुलकर खेलने दिया जाय, और उसी स्थिति में उसका शिकार किया जाय। इसमें उसका काम आसान और गुप्त रूप से हो सकता था। वह अपना काम भी करता रहता, और किसी को पता भी नहीं चलता।
तीसरा, स्थिति को ज्यों का त्यों रहने दिया जाय।
यानी प्रेतों को भी भरपूर रूप से आने दिया जाय, और खुला खेल खेला जाय।
ऐसा होता, तो उसे भी मजा आने वाला था।
इन तीनों तरीकों को जरूरत के अनुसार अलग अलग रूप में भी लागू किया जा सकता था।
पर सबसे बडी बात थी कि वह दयाराम की इस खेल में भूमिका कैसे शामिल करे, और यदि वह अकेला ही काम करता है, तो दयाराम क्या सोचेगा ?

वो उसे क्या समझ रहा है, और कितना विश्वास कर रहा है, ये सब समस्याएं थी।
जिनका उसे बडी सावधानी से हल निकालना था।
और जितना हो सके, शान्त तरीके से इस खेल को खत्म करना था।
तब उसे एक ही तरीका फ़िलहाल उचित लगा।
उसने कुसुम को घर में ही (मन्त्र से) बांध दिया, और घर में प्रेतों का प्रवेश रोक दिया।
तथा खाना खाने के बाद घोडे बेचकर सो गया।
दयाराम भी सो रहा था।
वह दोनों पूरी रात के जागे हुये थे, और शायद आगे भी उन्हें जागना था ?
दूसरी सबसे बडी बात थी कि बांधे जाने पर, और प्रेतों के न आने पर, कुसुम और प्रेतों का क्या रियेक्शन होना था। ये प्रसून देखना भी चाहता था, और मजा भी लेना चाहता था।
उसे केवल एक ही बात का डर था कि कुसुम और प्रेत पार्टी में कोई भी लग्गड (ताकतवर) प्रेत उसके परिचय का निकल आया, तो प्रेत पार्टी मैदान छोडकर भाग जायेगी, और फ़िर उसे मिशन कुसुम के लिये खामखाह के अतिरिक्त प्रयास करने होंगे। जिनमें समय भी अधिक लगेगा, और फ़िर दयाराम उसकी वास्तविकता निश्चय ही जान जायेगा।
जिससे यथासंभव वह बचना ही चाहता था।
फ़िर शाम छह बजे, जब वह उठा तो खुद को एकदम तरोताजा महसूस कर रहा था।
दयाराम उससे पहले ही उठ चुका था और अब उसके जागने का इंतजार कर रहा था।
शाम की चाय के बीच प्रसून ने कहा - चरस के सुट्टे ही लगाते हो, या पीना पिलाना भी होता है। दयाराम उसका आशय समझ गया।
वह बोला - सब इंतजाम है।
दरअसल प्रसून ने एक योजना बना ली थी।
उस योजना के तहत पूरी रात उसे कुसुम से ही काम लेना था।
दयाराम की उसमें कोई भूमिका नहीं थी।

इसलिये वह नशे में उसे इतना ओवर कर देना चाहता था कि वह उसके काम में कोई दखलन्दाजी न कर सके, और बेसुध सोता ही रहे।
रूपलाल, गली के पार स्कूल में सोता था, और बच्चों का अलग पोर्शन था।
इसलिये दयाराम के नशे में धुत्त होते ही मैदान साफ़ हो जाना था, और उसे इसी का इंतजार था।
उसने कुसुम के मूड का जायजा भी लिया।
उसकी आशा के अनुरूप ही वह गडबड महसूस कर रही थी और बेहद ही बैचेन थी।
वह कनखियों से बारबार उसे ही देख रही थी, और सोच रही थी कि इन बदली परिस्थितियों में उसका कितना हाथ हो सकता है, और यह आदमी कौन है।
कंकाल कालिनी विद्या जानने वाली वह शक्तिशाली प्रेतनी, उसे हर कोण से तौलने की कोशिश कर रही थी, और कुछ आश्चर्य से अपने को असमर्थ सा महसूस कर रही थी।
क्योंकि उस वक्त प्रसून 'कवर्ड' स्थिति में था, और साधारण था।
फ़िर ठीक वैसा ही हुआ।
रात दस बजे तक खाने और पीने के दौर में थोडी और थोडी और.. करते हुये प्रसून ने दयाराम को न सिर्फ़ काफ़ी शराब पिला दी, बल्कि नशे के ही क्षणों में दो नींद की गोलियां भी उसकी दारू में मिला दी।
अब उसके गणित के अनुसार वह सुबह ही उठने वाला था, और इस तरह उसके लिये मैदान एकदम साफ़ था। फ़िर उसे एक विचार आया, और इसी विचार के तहत वह ऊपर जाकर छत पर लेट गया।
दयाराम नशे में धुत्त नीचे कमरे में ही सो गया था।
अब उसे सिर्फ़ प्रेतनी का इंतजार था।
कुसुम का इंतजार था। कुसुम कहाँ हो सकती थी ?
ऐसे ही विचारों में खोया हुआ वह आसमान के उन असंख्य तारों को देख रहा था।
जिनके बीच लाखों करोडों प्रेतलोक थे, देवलोक थे, तान्त्रिक लोक थे, अंधेरे लोक थे

।
अच्छे लोक थे, बुरे लोक थे।
और हर लोक का अपना एक अलग अन्दाज था, एक अलग रवैया था।
एकान्त होते ही उसे बाबाजी की याद हो आयी, नीलेश की याद हो आयी।
नीलेश की कितनी इच्छा होती थी कि वो अधिकाधिक समय उसके साथ गुजारे, बाबाजी के साथ गुजारे। पर ऐसा संभव नहीं हो पाता था।
बाबाजी इन्हीं किन्हीं लोकों में हो सकते थे, या इस ब्रह्मांड के पार अन्य सृष्टि में भी हो सकते थे। चारों तरफ़ माया का अदभुत खेल सा फ़ैला हुआ था।
तभी अचानक उसकी विचार श्रंखला को झटका लगा।
उसे किसी के ऊपर आने की आहट हुयी, और कुछ ही मिनट बाद कुसुम उसके सामने थी।
कैसा अदभुत खेल था।
दयाराम पहले उसे प्रेत होने के बावजूद पत्नी समझते हुये व्यवहार करता रहा, फ़िर वह जान गया कि पत्नी के रूप में कुसुम प्रेतनी है। फ़िर भी वह कुछ नहीं कर सका, और उसे व्यवहार करना पडा।
वह पहले से ही जानता था कि उसके पास खडी औरत प्रेतनी है, फ़िर भी वह उससे व्यवहार करेगा। ये अदभुत खेल नहीं, तो और क्या था ?
उसके पास आते ही प्रसून ने बहाना करते हुये, चौंकते हुये 'कौन है, कहकर टार्च की रोशनी उसके ऊपर फ़ेंकी। जबकि आसपास जलती हुयी स्ट्रीट लाइट का हल्का उजाला मौजूद था।
वह अपने पूरे बदन पर मात्र एक झीनी सी साडी पहने हुयी थी और उसके शरीर का प्रत्येक कटाव स्पष्ट झलक रहा था।
- आइये कुसुम जी। उसने कोहनी और तकिये के सहारे अधलेटा होकर कहा - नींद नहीं आ रही थी क्या ? जवान रातों में, अक्सर जवान लोगों को नींद न आना, एक आम बात है। तब जवान लोग, किसी जवान लोग के पास, किसी न किसी बहाने से

पहुँच ही जाते हैं ?
कुसुम की आँखे अंधेरे में किसी जंगली बिल्ली की तरह चमकी।
उसने प्रसून की द्विअर्थी बात और अश्लील संकेत का कोई खास नोटिस नहीं लिया।
वह निसंकोच ही तख्त पर उसके पास बैठ गयी और कुछ निर्णय सा करते हुये बोली - सच सच बताओ, तुम कौन हो ? मैंने तुम्हें पहले तो कभी नहीं देखा।
- मैं एक चलता फ़िरता प्रेत हूँ। उसने सीधे सीधे लाइन पर आते हुये कहा - और जहाँ तेरी जैसी प्रेतनी जवानी की आग में जल रही होती है। उसको खोजकर पहुँच ही जाता हूँ।
- तुम प्रेत नहीं हो। वह लगभग गुर्राकर बोली - तुम एक तान्त्रिक हो, और मैं यह भी जानती हूँ कि तुमने ही मुझे बांधा है, और तुमने इस घर को भी बांध दिया है।
- अब तू जान ही गयी है। प्रसून जैसे बेशर्मी से बोला - तो फ़िर मैं, अब कर भी क्या सकता हूँ।
फ़िर उसकी आशा के अनुरूप ही कुसुम ने साडी उतारकर फ़ेंक दी, और एकदम निर्वस्त्र हो गयी। उसने अपने लम्बे बालों को हिलाते हुये रूप बदलने की असफ़ल कोशिश की। जिसमें वह नाकामयाब रही, और थोडी ही देर में हांफ़ने लगी।
- जब तू। प्रसून हँसते हुये बोला - ये जानती है कि बंधी हुयी है, फ़िर क्यों हाथ पांव मार रही है।
वह जलती आँखों से उसे घूरने लगी और हथियार डालते हुये बोली - आखिर तुम चाहते क्या हो ?
- मेरी प्यारी बिल्लो। उसने सिगरेट सुलगाते हुये कहा - चल चुपचाप बैठ जा। प्रेतों से आग बुझाने का शौक है तुझे। इस हट्टे कट्टे आदमी में, क्या तुझे कांटे नजर आ रहे हैं ?
कोई आधा घन्टे तक वह निर्विकार उससे बिना बोले लेटा रहा।
इस बीच कुसुम ने उसकी कोई परवाह न करते हुये अपने स्तनों पर स्वतः ही हाथ फ़िराया, और बारबार जीभ से अपने सूखे होंठो को चाटने लगी।
इसकी वजह ये थी कि उसकी प्रेतक गतिविधियों का ज्यों ज्यों समय होता जा रहा था

। वह बैचेनी महसूस कर रही थी। एक पुरुष का सामीप्य उसे और भी ज्यादा बैचेन कर रहा था।
और वास्तव में प्रसून का असली उद्देश्य ही कुसुम के अन्दर के प्रेतत्व को पूरी तरह जगाना था।
उसके पास पहले से तैयार पीपल की पत्तों युक्त टहनी थी। जिससे प्रसून बीच बीच में उसके बदन पर बहुत हल्का प्रहार सा कर देता था।
आखिरकार वो वक्त आ ही गया। जब वो पूरे प्रेत आवेश में हो गयी।
उसने बैठते हुये एक सिगरेट सुलगायी और भरपूर धुंआं उसके मुँह पर फ़ेंका।
उसके वक्षों पर फ़ेंका और अन्यत्र उसके बदन पर फ़ेंका।
वह एक कामुक अंगडाई लेती हुयी पूरी बेशर्मी से हंसने लगी और उसके बदन पर चढ़ने की कोशिश करने लगी। वह बारबार उसके अंग को छूने की चेष्टा करती।
तब अंत में प्रसून ने उसकी गंदले मटमैले रंग की मुर्दा आँखों में आँखें डाल दी।
वह जोर जोर से झूमने लगी और अपने गालों छातियों पर प्रहार करने लगी।
फ़िर उसे गन्दी गन्दी गालियां देने लगी और गालियां देते हुये सम्भोग के लिये उकसाने लगी।
पर प्रसून ने उसकी किसी बात पर ध्यान नहीं दिया।
फ़िर जैसे ही वह खडी हुयी।
उसने अभिमंत्रित पीपल की टहनी के भरपूर वार उसके शरीर पर किये।
और बोला - अब बता, असली कहानी क्या है, और तू है कौन ?
- मैं शारदा हूँ। वह सिसकियों के बीच बोली - कुसुम की बडी बहन ?
उसने जो बताया, वह प्रसून के लिये आश्चर्यजनक नहीं था।
उसे बहुत कुछ पहले से ही मालूम था।
बस उस पर प्रेतनी की स्वीकारोक्ति का ठप्पा लगना था, जो वह लगा चुकी थी।
शारदा युवावस्था से ही मनचले स्वभाव की थी और राजेश नाम के एक लडके को प्यार करती थी। उन दोनों के बीच शारीरिक सम्बन्ध भी थे, जो दयाराम से शादी से

पहले, और शादी के बाद भी बदस्तूर जारी रहे।
दयाराम के साथ शादी का इतना लम्बा वक्त गुजर जाने के बाद, तीन बच्चे हो जाने के बाद भी उसके दिल में राजेश ही बसता था। वह अपने पहले प्यार को कभी भुला न सकी थी।
फ़िर दोनों की अलग अलग जगह शादियां हो गयीं।
इसके बाद भी राजेश गांव के नाम पर शारदा के घर आता रहा और दयाराम के अधिकतर घर पर न रहने के कारण उनकी कामलीला निर्विघ्न चलती रही। लेकिन यह इश्क चौदह साल बाद खुल ही गया, जब दयाराम ने अचानक उनको सम्भोगरत देख लिया।
इसके बाद भी घर बिगडऩे का ख्याल करते हुये उसने शारदा से तत्काल कुछ नहीं कहा और गुमसुम रहने लगा। पति से खुद की बेवफ़ाई और गलती के अपराधबोध से ग्रस्त होकर शारदा ने बिजली के तार से चिपक कर जान दे दी, जिसे कि दयाराम दुर्घटना समझ बैठा।
इस अकाल मौत के बाद जब वह लोखडा प्रेतों में भटक रही थी।
दुर्गा सिंह नामक एक मसान पूजक तान्त्रिक ने उसकी शेष आयु कंकाल कालिनी विद्या का उपयोग करते हुये किसी अपने की खातिर निकाल ली, और वह तिलमिला कर रह गयी।
सूक्ष्म शरीर में पहुँचने पर उसे ज्ञात हुआ कि अभी वह गलती मानें, पश्चाताप करे, तो शेष आयु के लिये फ़िर से जन्म ले सकती है। पर उसकी शेष आयु तो वो कमीना तान्त्रिक खत्म कर चुका था। अब प्रेत होकर भटकने के अलावा और कोई चारा नहीं था।
तभी प्रेतों में 'लपका' नाम से प्रसिद्ध कामभोग का रसिया मसान उसे पकडऩे ले गया और रखैल की तरह रखने लगा। वहीं उसने जाना कि दुबारा वह फ़िर से शरीर प्राप्त कर सकती है। पर इसके लिये उसे किसी जीवित औरत को उसके शरीर से निकालना होगा।

शारदा प्रेत के रूप में अक्सर हवेली पर आती रहती थी।
उसे अपने बच्चों और घर से भी मोह था, जो उसने मरने के बाद जाना।
उसने सोचा कि किसी तरह वह दोबारा ही इस घर में आ सके तो कितना अच्छा हो।
लेकिन प्रेत जिंदगी में होने के कारण प्रेतों के गुण भी उसके अन्दर तेजी से आ रहे थे।
तभी उसे पता चला कि दयाराम दुबारा से कुसुम से शादी कर रहा है। उसके मन में एक खतरनाक योजना आयी। उसने लपका के सहयोग से कुसुम के शरीर को प्राप्त करने का निश्चय किया पर लपका किसी भी हालत में उसे बिलकुल छोड़ने को तैयार नहीं था।
तब शारदा ने कहा कि वह दयाराम के घर को भ्रष्ट कर देगी और इस हालत में प्रेत आराम से हवेली में आ जा सकेंगे, और कुछ समय बाद वह भी रात में शमशान में आने लगेगी।
क्योंकि वह भी प्रेत जीवन की अभ्यस्त हो चुकी थी।
लपका राजी हो गया और उसे कंकाल कालिनी के तरीके बताने लगा।
आखिरकार वह दिन आ ही गया जब दयाराम कुसुम को विदा कराकर ला रहा था।
प्रेतवासा की अभिशप्त बगिया से पहले ही लपका ने दयाराम का दिमाग फ़ेर दिया और दयाराम मोटर साइकिल बगिया में ले आया, और कुछ ही देर में रहस्यमय नींद में चला गया।
तब प्रेतों ने कुसुम के दिमाग पर कब्जा करना शुरू किया और उसे जोहड़ के पानी में डुबोकर मार डाला। शारदा लपका के सहयोग से कुसुम के शरीर में घुस गयी।
- लेकिन। प्रसून बोला - फ़िर कुसुम कहाँ गयी ?
- कुसुम काली टेकरी के आसपास ही रहती है, और सच्चाई जानने के बाद मुझसे सख्त नफ़रत करती है, लेकिन प्रेतों में नफ़रत मुहब्बत की बातें मायने नहीं रखती। यहाँ सब जायज है, वाला खेल चलता है।
प्रेतों और इंसानी रिश्तों के बीच इसी तरह के सम्बन्ध रहते हैं। यह इंसानों को अजीब लग सकता है पर प्रेतों को नहीं। इसके बावजूद भी प्रेतों में अच्छी आत्माएं भी होती

हैं, जो किसी का बुरा नहीं करती।
दरअसल मरने से पहले जो स्वभाव मनुष्य का होता है। प्रेत बनने के बाद उसमें और भी दुर्गुण समा जाते हैं। पेट की भूख और योनि की भूख जब इंसान से क्या क्या नहीं कराती, तो प्रेतों के तो साधन फ़िर भी सीमित होते हैं। पेट की भूख के लिये प्रेत भोजन से उङने वाली खुशबू को आहार के रूप में ग्रहण करते हैं, और योनि की भूख हेतु अनेकों उपाय होते हैं।
- अगर। उसने जानते हुये भी बीच में ही उसे टोकते हुये कहा - जो खेल तूने कुसुम के साथ लपका के सहयोग से मिलकर खेला। वही खेल दुबारा से कुसुम खेलना चाहे, तो वापस अपने शरीर को प्राप्त कर सकती है ?
- हाँ। वह बोली - पर वह शरीर इंसानी शरीर नहीं होगा, बल्कि एक मुर्दा शरीर में प्रेतात्मा ही होगी। इस तरह के शरीर के नियम कायदे बेहद अलग हैं। उसे इंसान और प्रेतों दोनों से वास्ता रखना होगा। शुरुआती अवस्था में ऐसे औरत शरीर से सम्भोग करने पर उसके बच्चे तो हो जाते हैं, पर वे जीवित नहीं रहते। ये बङी विचित्र बात है कि वह शरीर जिंदा भी होता है, और नहीं भी होता। जैसे इस वक्त कुसुम का ये शरीर महज एक लाश है। इसकी पहचान ये है कि यदि इसको छेदकर यदि खून निकाला जाय, तो पीले मटमैले रंग का द्रव निकलेगा।
- वास्तव में। वह सिसकती हुयी बोली - इंसानी शरीर की चाहत ने मुझे अन्धा कर दिया था। जिसके चलते मैंने अपनी निर्दोष बहन के साथ ही धोखा किया। जबकि ये शरीर मामूली और कामचलाऊ उपयोग का ही होता है। एक प्रेत को इससे भोजन और सहवास की पूर्ति अवश्य मिलती है। लेकिन इस शरीर के साथ बरताव करने की परेशानियां भी कम नहीं हैं ...यह असल जिन्दगी जैसा नहीं है। मैंने अपनी बहन का घर और जिंदगी भी बरबाद की, और मुझे वो लाभ भी नहीं मिला, जो पहले मैं समझ रही थी।
- अब, आखिरी सवाल। प्रसून ने उसके दांयें स्तन में लगभग टहनी गङाते हुये से कहा - इस घर को कैसे छोङेगी ?

तब वह अचानक क्रुद्ध होकर उस पर झपटी।
प्रसून ने एक झन्नाटेदार थप्पड उसके मुँह पर मारा और टहलता हुआ छत की बाउंड्री के पास आ गया। उसने सडक के पार स्कूल के सामने खडे बरगद पर निगाह डाली, जिस पर तीन प्रेत मौजूद थे, और आश्चर्य से हवेली की ओर बारबार देखते थे।
पर हवेली बंधी होने के कारण, वह न तो हवेली के अन्दर आ सकते थे, और न ही देख सकते थे।
यही हालत हवेली के अन्दर कुसुम (शारदा) की थी।
वह बारबार प्रसून से खुद को मुक्त करने के लिये गिडगिडा रही थी, और विश्वास दिला रही थी कि वह जल्दी ही लौट आयेगी।
तब प्रसून रहस्यमय अन्दाज में बोला - कल मैं हमेशा के लिये तुझे मुक्त कर दूँगा।
उसके बाद तख्त को 'सीमा रेखा' में बांधकर प्रसून निश्चिंत होकर सो गया।
अब शारदा उसे किसी प्रकार से डिस्टर्ब नहीं कर सकती थी, और घर से बाहर भी नहीं जा सकती थी।
वह क्या सोच रही थी। इससे भी उसे कोई लेना देना नहीं था।
उसकी पूरी सहानुभूति कुसुम के साथ थी, जो सूक्ष्म शरीर के असह्य कष्ट भोग रही थी, पर इसमें स्थायी रूप से कोई भी तान्त्रिक शक्ति किसी प्रकार का बदलाव नहीं कर सकती थी।
दूसरे दिन दयाराम के जगाने पर उसकी नींद खुली।
वह चाय की प्याली के साथ उसके सिरहाने मौजूद था, और उसके ऊपर छत पर आकर लेटने पर आश्चर्य महसूस कर रहा था।
चाय पीने के बाद प्रसून ने सिगरेट सुलगायी और आने वाली रात में उसकी प्रेत समस्या को जड से खत्म करने का निश्चय कर लिया।
अब सारा काम आसान ही था।
आज शाम को प्रसून शारदा को मुक्त करता और फ़िर किसी बहाने से रिवाल्वर के साथ दयाराम को काली टेकरी ले जाता।

शारदा जो कि उसकी कैद में थी। उसको मानसिक आदेश देकर बुलाता और उसे रूप बदलने पर विवश करता। इसके बाद दयाराम उस अनोखे जानवर को गोली मार देता, जो कि उस दिन उड़न छू नहीं हो सकता था, और..?

दयाराम उस दिन अपने आपको बेहद प्रसन्नचित्त महसूस कर रहा था। इसका कारण वह स्वयं भी नहीं जानता था, पर प्रसून जानता था। एक तो वह जब से वह उसके साथ था, प्रेत के प्रभाव से प्रभावित नहीं हुआ था। दूसरे वह सालों बाद गहरी नींद सोया था। जिसमें शराब और नींद की गोली की महत्वपूर्ण भूमिका थी।

एक क्षण के लिये तो ऐसा लग रहा था। उसे किसी प्रकार की कोई परेशानी है ही नहीं।

उसको और अधिक टेंशन फ़्री करने के लिये प्रसून घुमाने के बहाने नदी के किनारे ले गया। जहाँ उसे कुछ आवश्यक कार्य करने थे। दयाराम अपने स्वभाव के अनुसार अपने बारे में बताता रहा। जिसको प्रसून नकली हूँ हाँ करते हुये सुनने का बहाना करता रहा और अपने कार्य में लगा रहा। लेकिन दयाराम इस बात से अनभिज्ञ ही रहा कि प्रसून क्या कर रहा है ?

एक तो वह अपनी बातों में मस्त था, दूसरे उसे जमीन आदि पर नुकीली लकड़ी द्वारा रेखायें खींचते और तन्त्र आदि बनाते हुये देखकर उसने यही सोचा कि वह जीव जन्तुओं की खोज से सम्बन्धित कोई कार्य कर रहा है।

वास्तव में तो वह अन्दाजा भी नहीं लगा सकता था कि उसका कितना बड़ा काम हो चुका था और कितना होने वाला था। कोई एक बजे उसका पूरा कार्य खत्म हो गया। लपका मसान इस स्थान पर आज रात के लिये बंध चुका था और काली टेकरी पर वह उसे या खासतौर पर दयाराम को डिस्टर्ब नहीं कर सकता था। ऐसा उसे इसलिये करना पड़ा, क्योंकि कल रात कुसुम के बाहर न जाने से लपका को दाल में काला लग सकता था, और हवेली के बंधे होने पर तो उसका पक्का यकीन ही हो गया होगा। इसलिये शाम को जब वह कुसुम रूपी शारदा को मुक्त करता, तो लपका उस समय व्यर्थ में फ़टे में टांग अड़ाता, और तब उसे खुलकर लड़ाई लड़नी पड़ती, और इस

तरह एक फ़ालतू का बखेड़ा होता। जिससे प्रसून बचना चाहता था, और दूसरे इस रात का पूरा पूरा समय प्रसून कुसुम की खातिर खर्च करना चाहता था, जिससे उसे पूरी सहानुभूति थी।

वहाँ से निपटने के बाद वह दयाराम के साथ बाजार गया और हनुमान बीसा का चमत्कार दिखाने का बहाना करते हुये उसने कुछ जरूरी सामान खरीदा।

दयाराम उसकी बातों पर हँस रहा था, पर न जाने किस भावना से प्रेरित होकर उसका कहना मान रहा था। उसे दरअसल दिलचस्पी थी कि वह आखिर क्या करने वाला है ?

शाम को पांच बजे के लगभग प्रसून ने शारदा पर से बंध हटा लिया।

वह नौ बजे तक बैचेन होकर इधर उधर घूमती रही और फ़िर अहाते में जाकर उसकी बाउंड्री कूदकर गायब हो गयी।

प्रसून रहस्यमय अन्दाज में मुस्कराया और वापस कमरे में आकर दयाराम के पास बैठ गया।

जो टीवी के सामने दारू की बोतल खोले उसका इंतजार करता हुआ टीवी देख रहा था।

प्रसून ने मना कर दिया कि पूजा की वजह से आज न वह पियेगा, और न ही दयाराम पियेगा।

ठीक ग्यारह बजे प्रसून दयाराम के साथ काली टेकरी पर मौजूद था।

कुसुम अपने सूक्ष्म शरीर के साथ गुमसुम सी आम की डाली पर बैठी थी, और न जाने कब से भूखी थी।

प्रसून उसको देख सकता था, और वह भी उसे देख सकती थी।

लेकिन ये नहीं जान सकती थी कि वह उसको देख रहा है।

पर दयाराम इस रहस्य को नहीं जानता था।

कुसुम की उस दशा पर प्रसून की आँखों में आंसू आ गये।

उसने उसी डाली के नीचे देशी घी में चावल आदि खाद्य पदार्थ भरपूर मात्रा में

मिलाकर आग जलाकर एक कटोरे में रख दिये।
दयाराम हैरत से उसकी कार्यवाही देख रहा था।
कुछ ही देर में सुगन्धित धुंआं खुशबू के साथ उडकर कुसुम के पास जाने लगा।
उसे बेहद आश्चर्य हुआ पर भूख से व्याकुल होने की वजह से वह इस तरफ़ से ध्यान हटाकर प्रेत आहार ग्रहण करने लगी।
प्रसून ने दयाराम की आँख बचाकर अपनी नम आँखों को पोंछा।
पौने बारह बज चुके थे।
अब उसे शारदा का इंतजार था।
उसने मानसिक आदेश उसको दिया।
लगभग दस मिनट बाद ही एक नंगी औरत लगभग उडने के अन्दाज में काली टेकरी पहुंची।
उसने अभी अभी दयाराम से लिया हुआ रिवाल्वर सावधानी से पकडे लिया और एक निगाह भोजन से त्रप्त होकर बैठी हुयी कुसुम पर डालकर मन ही मन कहा - कुसुम चार साल से भटकती और तडपती तेरी आत्मा आज निश्चय ही शान्ति को प्राप्त होगी, जब तू अपनी कमीनी बहन का अन्जाम अपने आँखों से देखेगी।
हे निर्दोष आत्मा, तू नहीं जानती। ये सारा खेल मैंने तेरी आँखों के सामने ही करने के लिये इतना बडा नाटक रचा। वरना शारदा जैसी कुतिया तो कलियारी कुटी से ही दफ़ा हो जानी थी। मैं उसी वक्त समझ गया कि दयाराम से ज्यादा तो तू भुगत रही है। मैं तेरे लिये, जितना मुझसे बन पडेगा, करूँगा। शाय़द ऐसा ही होना हो, शायद ऐसा ही लिखा हो। शायद वो मुझे निमित्त बनाकर ऐसा ही चाहता हो..।
अगला दृश्य दयाराम के लिये पूर्व परिचित था।
नंगी मुर्दा औरत चिता वाले स्थान पर लोटने लगी और लोमडी और सियार की मुखाकृति वाले छोटे जीव में बदलने लगी।
प्रसून ने रिवाल्वर वाला हाथ सीधा किया, उसके मुँह से निकला - अलविदा शारदा।
और उसने घोडा दबा दिया।

गोली की आवाज सन्नाटे को चीरती चली गयी।
मायावी जानवर की कांय कांय मुश्किल से आधा मिनट हुयी, और फ़िर वहाँ कुसुम की निश्चल लाश नजर आने लगी।
दयाराम हैरत से मुँह फ़ाडे उसकी तरफ़ देखता रह गया।
उसने आम की डाली पर बैठी कुसुम पर नजर डाली, पर वो वहाँ नहीं थी।
प्रसून ने मुढ़कर देखा। वह दूसरी तरफ़ खडी थी।
उसके चेहरे पर गहन संतुष्टि के भाव थे, और वह अजीब नजरों से उसे देख रही थी।
खुद दयाराम का यही हाल था।
वो हक्का बक्का होकर उसे ही देख रहा था।
पर उसके पास अब ऐसी बातों के लिये वक्त नहीं था। अभी उसे बहुत से काम करने थे।
उसने दयाराम के सहयोग से कुसुम की लाश उठाई, और पहले से ही सूखी पत्तियों और टहनी से भरे एक गढ्ढे में पत्तों के बीच दबा दी। इसके साथ ही उसने मोटर साइकिल पर थैले में बंधे सामान से दस किलो देशी घी गढ्ढे में डाल दिया, और माचिस से एक पलीता जलाता हुआ दयाराम को देकर बोला - अपनी पत्नी का, अंतिम संस्कार करो, दयाराम।
दयाराम ने आँसू बहाते हुये पत्तों को आग लगा दी।
प्रसून ने टेकरी के पास पडी दो मोटी पिंडियों को दयाराम के सहयोग से उठाकर गढ्ढे में डाल दिया।
लगभग चार साल पहले मृत्य को प्राप्त हुआ मुर्दा, धू धू कर जलने लगा।

अगली सुबह कलियारी कुटी जाने के स्थान पर प्रसून चेन्नई के लिये रवाना हो गया। अपनी साधना को कुछ दिनों हेतु टालना जरूरी हो गया था।
दयाराम निश्चित ही उसकी खोज में दुबारा वहाँ जाता, जो कि प्रसून किसी कीमत पर नहीं चाहता था।

कुसुम का प्रसून पक्का इंतजाम कर चुका था।
उससे सम्पर्क करके प्रसून ने उसे अपनी असलियत बता दी थी और उसके किसी शान्त प्रेतलोक में पहुँचाने का वादा कर दिया था।
जहाँ उसे कोई परेशान नहीं करता। जहाँ उसके भोजन की कोई समस्या नहीं होती।
लेकिन जब तक ऐसा नहीं होता। तब तक के लिये उसने उसे कुछ तरीके बताये।
जिनसे वह आराम से रह सकती थी।
कुसुम के अचानक गायब होने का उपाय दयाराम को उसने ये बताया था कि उसके घर फ़ोन कर देना कि घर से लङ कर चली आयी है। फ़िर उसके गायब होने की रिपोर्ट लिखा देना, और उसके बाद अखबार में गुमशुदा की खोज।
इसके कुछ ही दिनों में मामला समाप्त।
शारदा से उसे कोई सहानुभूति नहीं थी।
उसने प्रसून से पूछा - अब मैं क्या करूँ ?
वह बोला - भाङ में जाओ।
दयाराम उसके न चाहते हुये भी बहुत कुछ समझ चुका था।
वह उसका फ़ोन न. और घर का पता आदि जानने की बारबार जिद कर रहा था।
जिसे प्रसून ने अगली बार बताने का वादा किया, और वह अगली बार कभी नहीं आनी थी।
आखिर में बेहद रिकवेस्ट करते हुये उसने पूछा - कम से कम इतना बता दो कि आखिर तुम हो कौन ?
- एक सीधा साधा सरल इंसान। प्रसून ने हँसते हुये कहा, और गाङी आगे बढ़ा दी।

(समाप्त)

(इस कथा के सभी पात्र, चरित्र, स्थान आदि काल्पनिक हैं, और इस कहानी का एकमात्र उद्देश्य मात्र मनोरंजन ही है।)

लेखक की अन्य रचनायें

1 नगर कालका
2 काली विधवा
3 प्रेतकन्या
4 प्रसून का इंसाफ़
5 पिशाच का बदला
6 प्रेतनी का मायाजाल
7 डायन
8 अंगिया वेताल
9 औरत नहीं चुड़ैल
10 लक्ष्मण रेखा
11 अंधेरा
12 कामवासना
13 ओमियो तारा (अप्रकाशित)

copyright@rajeev kulshreshtha

- भाभी ! तब अचानक वह उसकी ओर देखता हुआ बोला - एक बात बोलूँ सच सच बताना। क्या तुम भैया से खुश नहीं हो, क्या तुम्हें तृप्ति नहीं होती ?

तब दूसरी तरफ़ देखती पदमा ने यकायक झटके से मुँह घुमाया।

फ़िर उसने तेजी से ब्लाउज के ऊपरी तीन हुक खोल दिये और नागिन सी चमकती आँखों से उसकी तरफ़ देखा।

- देख इधर। वह सख्त स्वर में बोली - ये दो बड़े बड़े माँस के गोले, सिर्फ़ चर्बी माँस के गोले, अगर एक जवान सुन्दर मरी औरत का शरीर लावारिस फ़ेंक दिया जाये तो फ़िर इस शरीर को कौवे कुत्ते ही खायेंगे। मेरी ये मृगनयनी आँखें किसी प्यासी चुड़ैल के समान भयानक हो जायेंगी। मेरे इस सुन्दर शरीर से बदबू और घिन आयेगी, फ़िर बताओ इसमें ऐसा क्या है ? जो किसी स्त्री को नहीं पता, जो किसी पुरुष को नहीं पता, फ़िर भी कोई तृप्त हुआ आज तक। अन्तिम अंजाम जानते हुये भी।

- नितिन जी ! वह ठहरे स्वर में बोला - बड़े ही अजीब पल थे वो, वक्त जैसे थम गया था। उस पर कामदेवी सवार थी, और मुझे ये भी नहीं पता उस वक्त उसकी मुझसे क्या ख्वाहिश थी। सच ये है कि मैं किसी सम्मोहन जैसी स्थिति में था। लेकिन उसका सौन्दर्य, उसके अंग सभी मुझे विषैले लग रहे थे और जैसे कोई अज्ञात शक्ति मेरी रक्षा कर रही थी। मुझे सही गलत का बोध करा रही थी, शब्द जैसे अपने आप मेरे मुँह से निकल रहे थे। जैसे शायद अभी भी निकल रहे हैं, शब्द।

नये उपन्यास '**कामवासना**' का अंश